हिंदुस्तान और पाकिस्तान की
आधुनिक उर्दू शायरी का प्रतिनिधि संकलन

सर्वोत्तम मुशायरा



मूल्य : रु० १५.००

प्रकाशक :
आर डी आई प्रिंट ऐंड पब्लिशिंग प्राईवेट लिमिटेड, ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बैलार्ड एस्टेट, बंबई

संयोजक :
प्रकाश पंडित

फोटो टाइप सेटिंग :
एन के इंटरप्राइज़ेज, नई दिल्ली-११०००२

मुद्रण :
प्रभात आफसेट प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२



इब्ने इन्शा



असर लखनवी



एहसान दानिश



जां निसार 'अख़्तर'



सईद अहमद 'अख़्तर'



हरिचंद 'अख़्तर'



अदा जाफ़री



जगन्नाथ 'आज़ाद'



विमल कृष्णा 'अश्क'



मज़हर इमाम



अमजद अस्सलाम 'अमजद'



बानी



बशीर बद्र



बलराज कोमल



प्रकाश पंडित



प्रेम वारबर्टनी



गुलाम रब्बानी 'ताबां'



मुईन एहसन 'जज़्बी'



'जिगर' मुरादाबादी



'जोश' मलीहाबादी


'हफ़ीज़' जालंधरी


'हफ़ीज़' होशियारपुरी


बदी उज़्ज़मां 'ख़ावर'


ख़लीलुल रहमान आज़मी


राज नारायण 'राज़'


नून मीम 'राशिद'


राही मासूम रज़ा


ज़ाहिदा ज़ैदी


'ज़ुबैर' रिज़वी


साहिर लुधियानवी


साग़र निज़ामी


मोहिंदरसिंह बेदी 'सहर'


सरदार जाफ़री


सलाम मछलीशहरी


सैफ़ुद्दीन 'सैफ़'


सैफ़ ज़ुल्फ़ी


शाज़ तमकनत


परवीन शाकिर


शिकेब जलाली


शकील बदायूनी


शमीम हन्फ़ी


रज़ी अख़्तर 'शौक़'


शौकत थानवी


शहरयार


शहज़ाद अहमद


नौबहार 'साबिर'


'सहबा' अख़्तर


सैयद ज़मीर जाफ़री


अहमद जफ़र


'ज़हीर' काश्मीरी


अब्दुल हमीद 'अदम'


उन्वान चिश्ती


आरिफ़ अब्दुल मतीन


जमीलुद्दीन आली


अहमद 'फ़राज़'


फ़ारिग़ बुख़ारी


फ़िराक़ गोरखपुरी


फ़ुरक़त काकोरवी


फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'


क़तील शिफ़ाई


क़ैसरुल जाफ़री


कृष्ण मोहन


कैफ़ी आज़मी


असरारुलहक़ 'मज़ाज'


मजीद अमजद


'मख़्मूर' सईदी


सैयद मोहम्मद जाफ़री


मोहम्मद अलवी


'मख़्दूम' मुहैयुद्दीन


मुर्तज़ा बरलास


मुसहिफ़ इक़बाल तौसीफ़ी


मुज़फ़्फ़र हन्फ़ी


मुनीर नियाज़ी


नासिर काज़मी


निदा फ़ाज़ली


अहमद नदीम क़ासिमी


नूर बिजनौरी


नैयर जहां नैयर


वज़ीर आग़ा

संयोजक :

जनाब साहिबे-सद्र और हाज़िरीने-मुशायरा ! जैसा कि आप जानते हैं, आज तक के मुशायरों का यह चलन रहा है कि पहले नौजवान और मक़ामी यानी लोकल शायरों को कलाम सुनाने के लिए बुलाया जाता है; फिर पुख़्ता उम्र और मेहमान शायरों की बारी आती है, और आख़िर में सब से मशहूर और बुज़ुर्ग शायर से कलाम सुनाने की दरख़्वास्त की जाती है.

लेकिन आज का यह इंडो पाकिस्तान मुशायरा हम नए अंदाज़ से शुरू कर रहे हैं. इस में नौजवान और पुख़्ता उम्र शायरों में कोई तफ़्रीक़[१] नहीं की जाएगी. न ही ख़वातीन शायरात[२] और पाकिस्तान के मेहमान शायरों के साथ कोई इम्तियाज़ी[३] सुलूक बरता जाएगा; बल्कि हर शायर को उस के नाम या तख़ल्लुस के मुताबिक़ उर्दू के हुरूफ़े-तहज्जी से यानी अल्फ़ेबैटकली बुला कर कलाम सुनाने की फ़र्माईश की जाएगी; ताकि शायरों की किसी ख़ुसूसियत की बजाय उन के पेशकरदा कलाम के लिहाज़ से उन्हें दाद हासिल हो.

हज़रात ! इस नई तर्ज़ के मुशायरे का ख़याल हमें उस वाक़िया से आया है, जब कुछ दिन पहले एक मुशायरे में आख़िरी शायर हज़रत फ़िराक़ गोरखपुरी अपना कलाम सुना

चुके तो सुनने वालों ने एक नौजवान शायर से दोबारा शेर पढ़ने की ज़ोरदार फ़र्माइश की. बेचारा नौजवान शायर अजीब उलझन में पड़ गया; क्यों कि रिवाज़ या रिवायत के मुताबिक़ बुज़ुर्ग शायर फ़िराक़ साहिब के कलाम के बाद मुशायरा ख़त्म हो जाता था. उस ने बड़े अदब से हाज़िरीन पर अपनी मजबूरी ज़ाहिर की कि फ़िराक़ साहिब के बाद भला मैं कैसे अपना कलाम सुना सकता हूं

ख़ुद फ़िराक़ साहिब उस नौजवान शायर की शायरी से काफ़ी मुतासिर[४] हुए थे; इस लिए उन्हों ने रिवायतशिकनी[५] का रास्ता सुझाते हुए उस शायर से कहा ;

'क्यों मियां ! अगर तुम फ़िराक़ के बाद पैदा हो सकते हो तो फ़िराक़ के बाद अपना कलाम क्यों नहीं सुना सकते ?'

चुनांचे उसी रिवायतशिकनी पर अमल करते हुए आज के इस मुशायरे में शायरों की उम्र की बुनियाद पर कोई इम्तियाज़ नहीं बरता जाएगा. शायरों को इस बात की भी पूरी आज़ादी होगी कि वो रूमानी समाजी या सियासी जैसी तख़लीक़ात[६] चाहें पेश करें.

हज़रात ! आज के इस मुशायरे की सब से बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि इस में क़दीम उस्तादाना रंग में शेर कहने वाले शायर भी शिर्कतफ़र्मा[७] हैं और जदीद[८] बल्कि जदीदतरीन शायर भी.

अब आप का ज़्यादा वक़्त न लेते हुए मैं साहिबे-सद्र की इजाज़त से—सब से पहले इब्ने इन्शा साहिब से गुज़ारिश करता हूं कि वो तशरीफ़ लाएं और हमें अपने कलाम से महज़ूज़ फ़र्माएं[९]—जनाब इब्ने इन्शा साहिब !

१- भेद २- कवयित्रियां ३- विशेष ४- प्रभावित ५- प्रथा भंग ६- रचनाएं ७- सम्मिलित ८- नौजवान ९- आनंदित करें

इब्ने इन्शा

ग़ज़ल

जोग बिजोग की बातें झूटी, सब जी का बहलाना हो
फिर भी हम से जाते जाते एक ग़ज़ल सुन जाना हो

सारी दुनिया अक़्ल की बैरी, कौन यहां पर स्याना हो
नाहक़ नाम धरें सब हम को, दीवाना दीवाना हो

तुम ने तो इक रीत बना ली, सुन लेना शर्माना हो
सब का एक न एक ठिकाना, अपना कौन ठिकाना हो

नगरी नगरी लाखों द्वारे, हर द्वारे पर लाख सखी
लेकिन जब हम भूल चुके हैं, दामन का फैलाना हो

तेरे ये क्या जी में आई, खींच लिए शर्मा कर होंट
हम को ज़हर पिलाने वाली, अमृत भी पिलवाना हो

हम भी झूटे तुम भी झूटे, एक उसी का सच्चा नाम
जिस से दीपक जलना सीखा, परवाना मर जाना हो

सीधे मन को आन दबोचे, मीठी बातें, सुंदर लोग
मीर, नज़ीर, कबीर और इन्शा सब का एक घराना हो

असर लखनवी

ग़ज़ल

दिल का है रोना, खेल नहीं, मुंह को कलेजा आने दो
थमते ही थमते अश्क[१] थमेंगे, नासेह[२] को समझाने दो

कहते ही कहते हाल कहेंगे, ऐसी तुम्हें क्या जल्दी है
दिल तो ठिकाने होने दो, और आप में हम को आने दो

बज़्मे-तरब[३] में देख के मुझ को फेर ली आंखें साक़ी ने
मेरे लिए थे ज़हरे-हलाहल,[४] रस के भरे पैमाने दो

ख़ुद से गरेबां फटते थे अकसर, चाक[५] हवा में उड़ते थे
अब वो जुनूं[६] का जोश नहीं है, आई बहार तो आने दो

यादे-दिले-गुमगश्ता[७] में मैं ठंडी आहें भरता था·
हंस के सितमगर[८] कहता क्या है, बात ही क्या है जाने दो

दिल को 'असर' के लूट लिया है, शोख़-निगह[९] इक काफ़िर[१०] ने
कोई न उस को रोने से रोको, आग लगी है बुझाने दो

१- आंसू २- उपदेशक ३-आनंद गोष्ठी ४- घातक विष ५- चिथड़े ६- उन्माद
७- खोए हुए दिल की याद ८- अत्याचारी (प्रिया) ९- चंचल नेत्रों वाले १०- अधर्मी (प्रिया)

एहसान दानिश

ग़ज़ल

कभी मुझ को साथ ले कर कभी मेरे साथ चल के
वो बदल गए अचानक मेरी ज़िंदगी बदल के

हुए जिस पे मेहरबां तुम कोई ख़ुशनसीब होगा
मेरी हसरतें तो निकलीं मेरे आंसुओं में ढल के

तेरी ज़ुल्फ़ो-रुख़[१] के क़ुबां, दिले-ज़ार[२] ढूंडता है
वही चंपई उजाले वही सुरमई धुंदलके

कोई फूल बन गया है, कोई चांद, कोई तारा
जो चिराग़ बुझ गए हैं तेरी अंजुमन[३] में जल के

मेरे दोस्तो ख़ुदारा मेरे साथ तुम भी ढूंडो
वो यहीं कहीं छुपे हैं, मेरे ग़म का रुख़ बदल के

तेरी बेझिझक हंसी से न किसी का दिल हो मैला
ये नगर है आईनों का यहां सांस ले संभल के

१- चेहरे और केशों २- दुखी मन ३- महफ़िल

जां निसार 'अख़्तर'

घर आंगन की रुबाइयां

हर सुबह उठे उठ के अंधेरे में नहाए
आंखें जो उठाए भी तो नज़रें न मिलाए
रातों का मगर भेद छुपाए न छुपे
भीगे हुए बालों से महक सी आ जाए

o

आहट मिरे क़दमों की जो सुन पाई है
एक बिजली सी तन बदन में लहराई है
दौड़ी है हर इक बात की सुध बिसरा के
रोटी जलती तवे पे छोड़ आई है

o

नज़रों से मिरी ख़ुद को बचा ले कैसे
खुलते हुए सीने को छुपा ले कैसे
आटे में सने हुए हैं दोनों ही तो हाथ
आंचल को संभाले तो संभाले कैसे

o

हर चांदनी रात उस के दिल को धड़काए
भूले से भी खिड़कियों के परदे न हटाए
डरती है किसी वक़्त कोई शोख़ किरन
चुप्के से न उन के पास आ कर सो जाए

आती है झिझक सी उन के आगे जाते
वो देखते हैं कभी कभी तो ऐसे
घबरा के मैं बांहों में सिमट जाती हूं
लगता है कि मैं कुछ नहीं पहने जैसे

०

पढ़ती हूं जो ख़त कुढ़ के रह जाती हूं
आता है उन्हें मुझ को सताने में मज़ा
ये तक नहीं लिखेंगे कि वो कैसे हैं
कुछ होगा न बस प्यार की बातों के सिवा

०

सच, मेरी तो हर तरह मुसीबत है सखी
अपने लिए हर वक़्त कहेंगे बुरी बात
झुंझला के जो मुंह पे हाथ रख दूंगी कभी
फिर कुछ न हुआ तो चूम लेंगे मिरा हात

०

ये इत्र सुहाग का, ये उबटन की महक
तो क्यों न सुगंधों की दुल्हन कहलाए
पर मुझ को मेरी सखी बदन से अपने
आए तो फ़क़त उन्हीं की ख़ुशबू आए

०

रहता है अजब हाल मेरा उन के साथ
लड़ते हुए अपने से गुज़र जाती है रात
कहती हूं कि इतना न सताओ मुझ को
डरती हूं कहीं मान न जाएं मेरी बात

सईद अहमद 'अख़्तर'

ग़ज़ल

ग़म रात दिन रहे तो ख़ुशी भी कभी रही
इस बेवफ़ा से अपनी बड़ी दोस्ती रही

उन से मिलन की शाम घड़ी दो घड़ी रही
और फिर जो रात आई तो बरसों खड़ी रही

शामे-विसाल[१] दर्द ने जाते हुए कहा
कल फिर मिलेंगे दोस्त अगर ज़िंदगी रही

बस्ती उजड़ गई भी तो कीकर हरे रहे
दर[२] बंद हो गए भी तो खिड़की खुली रही

'अख़्तर' अगर चारों तरफ़ तेज़ धूप थी
दिल पर ख़याले-यार[३] की शबनम पड़ी रही

१- मिलन की रात २- दरवाज़े ३- प्रीतम की कल्पना

हरिचंद 'अख़्तर'

ग़ज़ल

मोहब्बत में तपाके-ज़ाहिरी[१] से कुछ नहीं होता
जहां दिल की लगी हो, दिललगी से कुछ नहीं होता

ये है जब्रे-मशीयत[२] या मिरी तक़्दीर है यारब
सहारा जिस का लेता हूं उसी से कुछ नहीं होता

कोई मेरी ख़ता है या तिरी सनअत[३] की ख़ामी है
फ़रिश्ते कह रहे हैं आदमी से कुछ नहीं होता

रज़ा[४] तेरी, लिखा तक़्दीर का, मेरी ज़ियां-कोशी[५]
किसी की दोस्ती या दुश्मनी से कुछ नहीं होता

मिरे दस्ते-तलब[६] को जुरअते-गुस्ताख़[७] दे यारब
यहां दस्ते-दुआ[८] की आजिज़ी[९] से कुछ नहीं होता

अगर तेरी ख़ुशी है तेरे बंदों की मसर्रत[१०] में
तो ऐ मेरे ख़ुदा तेरी ख़ुशी से कुछ नहीं होता

१- देखावे की आवभगत २- नियति का अत्याचार ३- बनावट ४- इच्छा
५- अपनी हानि का प्रयास ६- मांगने वाले हाथों ७- धृष्ट साहस ८- प्रार्थी हाथों
९- विनीतता १०- प्रसन्नता

अदा जाफ़री

ग़ज़ल

आख़िरी टीस आज़माने को जी तो चाहा था मुस्कराने को
याद इतनी भी सख़्त जां तो नहीं इक घरौंदा रहा है ढाने को

संगरेज़ों[१] में ढल गए आंसू लोग हंसते रहे दिखाने को
जख़्मे-नग़्मा[२] भी लौ तो देता है इक दिया रह गया जलाने को

जलने वाले तो जल बुझे आख़िर कौन देता ख़बर ज़माने को
कितने मजबूर हो गए होंगे अनकही बात मुंह पे लाने को

खुल के हंसना तो सब को आता है लोग तरसे हैं इक बहाने को
रेज़ा-रेज़ा[३] बिखर गया इन्सां दिल की वीरानियां जताने को

हसरतों की पनाहगाहों में क्या ठिकाने हैं सर छुपाने को
हाथकांटों से कर लिए ज़ख़्मी फूल बालों में इक सजाने को

आस की बात हो कि सांस 'अदा' ये खिलौने थे टूट जाने को

१- कंकरें २- गीत का घाव ३- कण कण

जग़न्नाथ 'आज़ाद

ग़ज़ल

हमारे रब्ते-बाहम[१] की कहां तक बात जा पहुंची
हक़ीक़त[२] से चली थी दास्तां तक बात जा पहुंची

उठीं दिल से यक़ीने-बाहमी[३] पर जिस की बुनियादें
ताज्जुब है वही आख़िर गुमां तक बात जा पहुंची

गुलिस्तां के किसी गोशे[४] पे इक कौंदा सा लपका था
मगर आख़िर हमारे आशियां[५] तक बात जा पहुंची

रफ़ीक़ो[६] ! दोस्तो ! दावे मोहब्बत के बजा, लेकिन
अगर मेरी बदौलत इम्तिहां तक बात जा पहुंची

वही तक राज़े-सरबस्ता[७] रही जब तक रही दिल में
ज़रा आई ज़बां तक और कहां तक बात जा पहुंची

शमीमे-गुल[८] ने जिस की इब्तिदा[९] की थी गुलिस्तां में
वही ज़िंदा[१०] में ज़ंजीरे-गिरा[११] तक बात जा पहुंची

किया था ज़िक्र सा बेमेहरी-ए-एहबाब[१२] का मैं ने
मगर नाक़द्री-ए-हिंदोस्तां[१३] तक बात जा पहुंची

१- परस्पर संबंध (प्रणय) २- वास्तविकता ३- परस्पर विश्वास ४- कोने ५- नीड़
६- साथियो ७- गुप्त भेद ८- पुष्प पवन ९- शुरुआत १०- कारागार ११- भारी ज़ंजीर
१२- मित्रों की उपेक्षा १३- भारत का निरादर करने

विमल कृष्ण 'अश्क'

ग़ज़ल

मन में जोत जगाने वाले त्याग गए ये डेरा जोगी
उत्तर दक्खन, पूरब पच्छम चारों ओर अंधेरा जोगी

द्वारे द्वारे अलख जगाने को तो सारी उम्र पड़ी है
सेज सजी दो चार घड़ी को कर ले रैन बसेरा जोगी

उस घर में इक कोरा आंचल रोते रोते भीग चला है
भूले ही से सही कभी तो मार उधर भी फेरा जोगी

पांओं पांओं मुड़ती पगडंडी आंख झपकते डस लेती है
जीवन की नागिन किस के बस, उस का कौन सपेरा जोगी

ये भभूत किस की पलकों, किस के बालों की परछाईं है
तेरे साफ़ सपेद जिस्म पर किस ने रंग बिखेरा जोगी

कान में कुंडल, कड़ा हाथ में, लंबे बाल घुंघरों वाले
तेरे तन के चार छुपेरे किस जोगिन का डेरा जोगी

जिस ने मुझ को घर बख़्शा है और आवारागर्दी तुझ को
उस की राहगुज़र किस घर से किस रस्ते पर डेरा जोगी

हर रुख़ पर परछाईं किसी की हर चेहरे पर अक्स किसी का
चलते फिरते बाज़ारों में क्या तेरा क्या मेरा जोगी

मज़हर इमाम

रात दिन का क़िस्सा

एक
पहचाना हुआ अनजान शहर
रात के काले बदन पर बरस[१] के उजले चिराग़
आदमी की खाल में चीते की रूह
जिस्म के मरघट पे सांसों की चिता जलती हुई
नक चढ़ी बीवी की सूरत
ज़िंदगी !

१- सफ़ेद कोढ़

अमजद अस्सलाम 'अमजद'

बाज़गश्त

ऐसी ही सर्द शाम थी वो भी
जब वो मेंहदी रचाए हाथों में
अपनी आहट[१] के ख़ौफ़ से लज़ाँ[२]
सुर्ख़ आंचल में मुंह छुपाए हुए
अपने ख़त मुझ से लेने आई थी

उस की सहमी हुई निगाहों में
कितनी ख़ामोश इल्तिजाएं[३] थीं
उस के चेहरे की ज़र्द रंगत में
कितनी मजबूरियों के साए थे
मेरे हाथों से ख़त पकड़ते ही
जाने क्या सोच कर अचानक वो
मेरा शाना[४] पकड़ के रोई थी
उस के याक़ूत[५] रंग होंटों के
कपकपाते हुए किनारों पर
सैंकड़ों अनकहे फ़साने[६] थे
सर्द शामों में देर तक अकसर
जब ये मंज़र[७] दिखाई देता है
एक लम्हा[८] हिनाई[९] हाथों से
मुझ को अपनी तरफ़ बुलाता है

हमनशीं[१०] रूठ कर न जा मुझ से
ऐसी ही सर्द शाम थी वो भी !

१- प्रतिध्वनि २- कपकपाती हुई ३- प्रार्थनाएं ४- कंघा ५- लाल ६- कहानियां ७- दृश्य
८- क्षण ९- मेंहदी रचे १०- साथी

आहट

इंतिज़ार ....
हर सितारे के दुरुख़्शां[1] हाथ में हंसता था
सन्नाटे का फूल

एक दम आहट हुई
फूल की इक एक पत्ती टूट कर गिरने लगी
गिर रही हैं पत्तियां ...
आने वाले की मुसलसल[2] आहटें
देर से मुझ को सुनाई दे रही हैं इस तरह
अब मिरे घर तक पहुंचने के लिए
—बाक़ी है गोया दो क़दम का फ़ासिला

१- प्रकाशमान २- निरंतर

बशीर बद्र

ग़ज़ल

सियाहियों के बने हर्फ़ हर्फ़[१] धोते हैं
ये लोग रात में काग़ज़ कहां भिगोते हैं

किसी की राह में दहलीज़ पर दिये न रखो
किवाड़ सूखी हुई लकड़ियों के होते हैं

चिराग़ पानी में मौजों[२] से पूछते होंगे
वो कौन लोग हैं जो कश्तियां डुबोते हैं

क़दीम[३] क़स्बों में कैसा सुकून[४] होता है
थके थकाए हमारे बुज़ुर्ग सोते हैं

चमकती है कहीं सदियों में आंसुओं से ज़मीं
ग़ज़ल के शे'र कहां रोज़ रोज़ होते हैं

१- अक्षर २- लहरें ३- पुराने ४- शांति

बलराज कोमल

फ़रागत[1]

यूं तेरी निगाहों से गिला कुछ भी नहीं था
इस दिल ने तो बेकार युं ही बैठे बिठाए
वीरानी-ए-लम्हात[2] को बहलाने की ख़ातिर
अफ़साने घड़े, बातें बना ली थीं हज़ारों

ये इश्क़ का अफ़साना जो फिर छेड़ा है तू ने
बेकार है अब वक़्त कहां इस को सुनूं मैं
जब तुझ को फ़राग़त न थी अब मुज को नहीं है !

१- फ़ुर्सत २- क्षणों की वीरानी

प्रकाश पंडित

संगरेज़ा[१]

लोग कहते हैं,
बड़े प्यार से समझाते हैं
संगरेज़ा है जिसे तू ने गुहर[२] मान लिया

लोग कहते हैं, बड़े प्यार सें समझाते हैं
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे
मुझ को तस्लीम[३] ब-सद अज्ज़ो-नियाज़[४]
मुझ को तस्लीम गुहर है न वो हीरा मोती
संगरेज़ा ही सही

कैसे जीते हैं वो लोग
कि जिन के पास
संगरेज़ा भी नहीं है कोई !

१- कंकर २- मोती ३- स्वीकार ४- सैंकड़ों नम्रताओं और श्रद्धाओं सहित

ग़ज़ल

आरती हम क्या उतारें तेरे ख़द्दो-ख़ाल[१] की
बुझ गई हर जोत, पूजा के सुनहरी थाल की

जब किसी लम्हे[२] ने भी रो कर पुकारा आप को
तोड़ डाली उम्र ने ज़ंजीर माहो-साल की

तुम तो क्या दस्तक नहीं देतीं हवाएं तक यहां
दिल है या सुनसान कुटिया है किसी कंगाल की

फिर उगाने दो यहां हम को लहू के कुछ गुलाब
आप ने तो शाहराहे-दिल[३] बहुत पामाल[४] की

सुर्ख़ शोलों के समुंदर ने निकाला है जिसे
चांदनी है या कोई मछली हवस के जाल की

तू मुक़द्दस[५] आंख है, यानी हसीं सूरज की आंख
और मैं गहरी गुफा, वो भी किसी पाताल की

पूछती हैं 'प्रेम' चंदीगढ़ की अकसर लड़कियां
आप के हर शे'र में ख़ुशबू है क्यों भोपाल की

१- नैन नक्श २- क्षण ३- दिल का राजपथ ४- रौंदना ५- पवित्र

गुलाम रब्बानी 'ताबां'

ग़ज़ल

रहगुज़र[१] हो या मुसाफ़िर, नींद जिस को आए है
गर्द की मैली सी चादर ओढ़ कर सो जाए है

कुर्बतें[२] ही कुर्बतें हैं, दूरियां ही दूरियां
आर्ज़ू[३] जादू के सहरा[४] में मुझे दौड़ाए है

वक़्त के हाथों ज़मीरे-शहर[५] भी मारा गया
रफ़्ता रफ़्ता[६] मौजे-ख़ूं[७] सर से गुज़रती जाए है

मेरी आशुफ़्तासरी[८] वजहे-शनासाई[९] हुई
मुझ से मिलने रोज़ कोई हादिसा आ जाए है

यूं तो इक हर्फ़े-तसल्ली[१०] भी बड़ी शै है मगर
ऐसा लगता है, वफ़ा बे आबरू हो जाए है

ज़िंदगी की तल्ख़ियां[११] देती हैं ख़्वाबों को जनम
तश्नगी[१२] सहरा में दर्या का समां[१३] दिखलाए है

किस तरह दस्ते-हुनर[१४] में बोलने लगते हैं रंग
मदरिसे[१५] वालों को 'ताबां' कौन समझा पाए है

१- मार्ग २- सामीप्य ३- कामना ४- मरुस्थल ५- नगर की आत्मा ६- शनैः शनैः
७- सिरफिरापन ९- परिचय का कारण १०- तसल्ली का शब्द ११- कटुताएं १२- प्यास
१३- दृश्य १४- कला के हाथों १५- पाठशाला (जो बंधे टुके नियमों के अनुसार शिक्षा देती है)

मुईन एहसन 'जज़्बी'

ग़ज़ल

एक मज़्हमिल[१] सी शाम है पर शामे-ग़म[२] नहीं
अहदे-करम[३] है याद, उमीदे-करम[४] नहीं

आंखों में वो नमी है जिसे कह सकें न अश्क[५]
दिल पर है वो सितम[६] कि बज़ाहिर[७] सितम नहीं

ये तश्ना-लब[८] न ग़र्क़ हों ख़ुद ही तो और बात
यूं तो शराब इन के प्यालों में कम नहीं

इक याद ख़ुशगवार[९] है और आहें सर्द-सर्द[१०]
इक बज़्मे-जम[११] का ज़िक्र है और बज़्मे-जम नहीं

१- शिथिल, उदास २- ग़म या विरह की शाम (रात) ३- कृपा या मिलन का वचन
४- कृपा या मिलन की आशा ५- आंसू ६- अत्याचार ७- प्रत्यक्ष ८- प्यासे ९- प्रिय
१०- ठंडी आह ११- प्रियजनों की महफ़िल

'जिगर' मुरादाबादी

ग़ज़ल

फूल खिले हैं गुलशन गुलशन
लेकिन अपना अपना दामन

उम्रें बीतीं, सदियां गुज़रीं
है वही अब तक अक़्ल का बचपन

इश्क़ है प्यारे खेल नहीं है
इश्क़ है कारे-शीशा-ओ-आहन[१]

ख़ैर, मिज़ाजे-हुस्न[२] की यारब
तेज़ बहुत है दिल की धड़कन

आज न जाने राज़ ये क्या है
हिज्र[३] की रात और इतनी रौशन[४]

इल्म[५] ही ठैरा इल्म का बाग़ी
अक़्ल ही निकली अक़्ल की दुश्मन

काटों का भी हक़ है कुछ आख़िर
कौन छुड़ाए अपना दामन

१- कांच और लोहे का कार्य २- प्रिया के स्वभाव ३- विरह ४- प्रकाशमान ५- ज्ञान

'जोश' मलीहाबादी

रिश्वत

लोग हम से रोज़ कहते हैं ये आदत छोड़िए
ये तिजारत है, ख़िलाफ़े-आदमियत[१] छोड़िए
इस से बदतर[२] लत नहीं है कोई ये लत छोड़िए
रोज़ अख़बारों में छपता है कि रिश्वत छोड़िए
भूल कर भी जो कोई लेता है रिश्वत चोर है
आज क़ौमी पागलों में रात दिन ये शोर है

किस को समझाएं इसे खो दें तो फिर पाएंगे क्या
हम अगर रिश्वत नहीं लेंगे तो फिर खाएंगे क्या
क़ैद भी कर दें तो हम को राह पर लाएंगे क्या
'ये जुनूने-इश्क़[३] के अंदाज़ छुट जाएंगे क्या'[४]
मुल्क भर को क़ैद कर दे, किस के बस की बात है
ख़ैर से सब हैं, कोई दो चार दस की बात है

ये हवस, ये चोरबाज़ारी, ये महंगाई, ये भाओ
राई की क़ीमत हो जब परबत तो क्यों आए न ताओ
अपनी तन्ख़्वाहों के नाले में है पानी आध पाओ
और लाखों टन की भारी अपने जीवन की है नाओ
जब तलक रिश्वत न लें हम, दाल गल सकती नहीं
नाओ तन्ख़्वाहों के पानी में तो चल सकती नहीं

ये है मिल वाला, वो बनिया, औ' ये साहूकार है
ये है दूकांदार, वो है वैद, ये अत्तार है
वो अगर ठग है, तो ये डाकू है, वो बटमार है
आज हर गरदन में काली जीत का इक हार है
हैफ़[५] ! मुल्को-क़ौम की ख़िदमत गुज़ारी के लिए
रह गए हैं इक हमीं ईमानदारी के लिए

भूक के क़ानून में ईमानदारी जुर्म है
और बेईमानियों पर शर्मसारी[६] जुर्म है
डाकुओं के दौर[७] में परहेज़गारी जुर्म है
जब हुकूमत ख़ाम[८] हो तो पुख़्ताकारी[९] जुर्म है
लोग अटकाते हैं क्यों रोड़े हमारे काम में
जिस को देखो, ख़ैर से नंगा है वो हम्माम में

देखिए जिस को, दबाए है बग़ल में वो छुरा
फ़र्क़ क्या इस में कि मुजरिम सख़्त है या भुरभुरा
ग़म तो इस का है, ज़माना है कुछ ऐसा खुरदरा
एक मुजरिम दूसरे मुजरिम को कहता है बुरा
हम को चाहें सो कह लें, हम तो रिश्वतख़ोर हैं
नासहे-मुश्फ़िक़[१०] भी तो, अल्लाह रक्खे, चोर हैं

तोंद वालों की तो हो आईनादारी,[११] वाह वाह
और हम भूकों के सर पर चांदमारी, वाह वाह
उन की ख़ातिर सुबह होते ही नहारी,[१२] वाह वाह
और हम चाटा करें ईमानदारी, वाह वाह

सेठ जी तो ख़ूब मोटर में हवा खाते फिरें
और हम सब जूतियां गलियों में चटख़ाते फिरें

इस गिरानी[१३] में भला क्या ग़ुंचए-ईम[१४] खिले
जौं के दाने सख़्त हैं, तांबे के सिक्के पिलपिले
जाएं कपड़े के लिए तो दाम सुन कर दिल हिले
जब गरेबां ता-ब-दामन आए[१५] तो कपड़ा मिले
जान भी दे दें तो सस्ते दाम मिल सकता नहीं
आदमियत का कफ़न है दोस्तो, कपड़ा नहीं

सिर्फ़ इक पतलून सिलवाना क़ियामत हो गया
वो सिलाई ली मियां दर्ज़ी ने नंगा कर दिया
आप को मालूम भी है, चल रही है क्या हवा
सिर्फ़ इक टाई की क़ीमत घोंट देती है गला
हलकी टोपी सर पे रखते हैं तो चकराता है सर
और जूते की तरफ़ बढ़िए तो झुक जाता है सर

थी बुज़ुर्गों की जो बनयाइन वो बनिया ले गया
घर में जो गाढ़ी कमाई थी वो गाढ़ा ले गया
जिस्म की इक एक बोटी गोश्त वाला ले गया
तन में बाक़ी थी जो चर्बी घी का पीपा ले गया
आई तब रिश्वत की चिड़िया पंख अपने खोल कर
वर्ना मर जाते मियां कुत्ते की बोली बोल कर

पत्थरों को तोड़ते हैं, आदमी के उस्तख़्वां[१६]
संगबारी[१७] हो तो बन जाती है हिम्मत सायबां[१८]
पेट में लेती है लेकिन भूक जब अंगड़ाइयां
और तो और, अपने बच्चे को चबा जाती है मां
क्या बताएं बाज़ियां हैं किस क़दर हारे हुए
रिश्वतें फिर क्यों न लें हम भूक के मारे हुए

आप हैं फ़ज़्ले-ख़ुदा-ए-पाक[१९] से कुर्सी नशीं[२०]
इंतिज़ामे-सल्तनत[२१] है आप के ज़ेरे-नगीं[२२]
आस्मां है आप का ख़ादिम, तो लौंडी है ज़मीं
आस्मां ख़ुद रिश्वत के ज़िम्मेदार हैं, फ़िदवी[२३] नहीं
बख़्शते हैं आप दर्या, कश्तियां खेते हैं हम
आप देते हैं मवाक़े[२४] रिश्वतें लेते हैं हम

ठीक तो करते नहीं बुनियादे-नाहमवार[२५] को
दे रहे हैं गालियां गिरती हुई दीवार को
सच बताऊं, ज़ेब[२६] ये देता नहीं सरकार को
पालिए बीमारियों को, मारिए बीमार को
इल्लते-रिश्वत[२७] को इस दुनिया से रुख़सत कीजिए
वर्ना रिश्वत की धड़ल्ले से इजाज़त दीजिए

वक़्त से पहले ही आई है क़ियामत देखिए
मुंह को ढांपे रो रही है, आदमीयत देखिए

दूर जा कर किस लिए तस्वीरे-इब्रत[२९] देखिए
अपने क़िबला[३०] 'जोश' साहब ही की हालत देखिए
इतनी गंभीरी पे भी मर मर के जीते हैं जनाब
सौ जतन करते हैं तो इक घूंट पीते हैं जनाब

१- मानवता विरोधी २- बुरी ३- प्रेमोन्माद ४- यह मिस्रा (पंक्ति) हज़रत ग़ालिब का है
५- अफ़सोस, खेद ६- लज्जित होना ७- काल ८- अपक्व ९- परिपक्वता
१०- स्नेही धर्मोपदेशक ११- रक्षा १२- नाश्ता १३- मंहगाई १४- धर्म रूपी कली
१५- गरेबान दामन तक आए (वस्त्र एकदम फट जाए) १६- हड्डियां १७- पत्थरों की वर्षा
१८- छत्रछाया १९- पवित्र भगवान की कृपा २०- कुरसी पर बैठे हुए (अधिकारी) २१- राज काज
२२- अधीन २३- सेवक २४- अवसर २५- असमतल नींव २६- शोभा
२७- रिश्वत के रोग या कारण २८- प्रलय २९- शोचनीय चित्र ३०- पूज्य

'हफ़ीज़' जालंधरी

ग़ज़ल

क्यों हिज्र[१] के शिकवा करता है, क्या दर्द के रोने रोता है
अब इश्क किया है तो सब्र भी कर, इस में तो यही कुछ होता है

आग़ाज़े-मुसीबत[२] होता है, अपने ही दिल की शरारत से
आंखों में फूल खिलाता है, तलवों में कांटे बोता है

एहबाब[३] का शिकवा क्या कीजे, ख़ुद ज़ाहिरो-बातिन[४] एक नहीं
लब[५] ऊपर ऊपर हंसते हैं, दिल अंदर अंदर रोता है

मल्लाहों को इल्ज़ाम न दो, तुम साहिल वाले क्या जानो
ये तूफ़ां कौन उठाता है, ये कश्ती कौन डुबोता है

क्या जानिए क्या ये खोएगा, क्या जानिए ये क्या पाएगा
मंदिर का पुजारी जागता है, मस्जिद का नमाज़ी सोता है

१- विरह २- मुसीबत का आरंभ ३- मित्रों ४- भीतर बाहर ५- होंठ

'हफ़ीज़' होशियारपुरी

ग़ज़ल

राज़े-सरबस्ता[१] मोहब्बत के ज़बां तक पहुंचे
बात बढ़ कर ये ख़ुदा जाने कहां तक पहुंचे

तेरी मंज़िल पे पहुंचना कोई आसान न था
सरहदे-अक़्ल[२] से गुज़रे तो यहां तक पहुंचे

इब्तिदा[३] में जिन्हें हम नंगे-वफ़ा[४] समझे थे
होते होते वो गिले, हुस्ने-बयां[५] तक पहुंचे

आह वो हर्फ़े-तमन्ना[६] कि न लब[७] तक आए
हाय वो बात कि इक एक ज़बां तक पहुंचे

न पता संगे-निशां[८] का न ख़बर रहबर[९] की
जुस्तुजू[१०] में तिरे दीवाने यहां तक पहुंचे

साफ़ तौहीन[११] है ये दर्दे-मोहब्बत की 'हफ़ीज़'
हुस्न का राज़ हो और मेरी ज़बां तक पहुंचे

१- गुप्त भेद २-बुद्धि की सीमा ३-आरंभ ४- वफ़ा के संबंध में लज्जा का कारण
५- अभिव्यक्ति के सौंदर्य ६- कामना अक्षर ७- होंठों ८- निशान का पत्थर (मील पत्थर)
९- पथ प्रदर्शक १०- तलाश ११- अपमान

बदी उज़्मां 'ख़ावर'

ख़िज़ां

झील के पानी में लहरें उठ रही हैं !
एक पत्ता गिर चुका है
एक पत्ता गिर रहा है
और थके मांदे मुसाफ़िर
बेख़बर इस राज से हैं–
ताज़गी क़दमों को जिस की छांव से मिलती रही है
रास्ते का वो मुक़द्दस[१] पेड़ नंगा हो रहा है !

१- पुनीत

खलीलुल रहमान आज़मी

ग़ज़ल

दिल की रह जाए न दिल में ये कहानी कह लो
चाहे दो हर्फ़[१] लिखो, चाहे ज़बानी कह लो

मैं ने मरने की दुआ मांगी, वो पूरी न हुई
बस इसी को मेरे जीने की कहानी कह लो

सरसरे-वक़्त[२] उड़ा ले गई रूदादे-हयात[३]
वही औराक़[४] जिन्हें अहदे-जवानी[५] कह लो

तुम से कहने की न थी बात मगर कह बैठा
अब इसे मेरी तबीयत की रवानी कह लो

वही इक क़िस्सा ज़माने को मिरे याद रहा
वही इक बात जिसे आज पुरानी कह लो

हम पे जो गुज़री है बस उस को रक़्मा करते हैं[६]
आप बीती कहो या मर्सिया-ख़्वानी[७] कह लो

१- अक्षर २- समय की आंधी ३- जीवन वृत्तांत ४- पृष्ठ ५- यौवन काल ६- लिखते हैं
७- मृत्यु पर शोक काव्य का पाठ

राज नारायण 'राज़'

ग़ज़ल

क्या बात थी कि जो भी सुना, अनसुना हुआ
दिल के नगर में शोर था कैसा मचा हुआ

सोया था एक पल को दुनिया बदल गई
उट्ठा तो सोचता हूं, ये दुनिया को क्या हुआ

क्या जाने क्या सवाल था जिस के जवाब में
हर शख़्स देखता था, मुझे घूरता हुआ

इक साया कल मिला था, तिरे घर के आस पास
हैरान, खोया खोया सा कुछ सोचता हुआ

तुम छुप गए थे जिस्म की दीवार से परे
इक शख़्स फिर रहा था, तुम्हें ढूंडता हुआ

भटका हुआ ख़याल हूं, वादी में ज़ेहन[१] की
अल्फ़ाज़[२] के नगर का पता पूछता हुआ

१- मस्तिष्क २- शब्दों

नून मीम 'राशिद'

ज़िंदगी से डरते हो !

ज़िंदगी सें डरते हो !
'ज़िंदगी तो तुम भी हो, ज़िंदगी तो हम भी हैं
आदमी से डरते हो !
आदमी तो तुम भी हो, आदमी तो हम भी हैं
आदमी ज़बां भी है, आदमी बयां भी है
उस से तुम नहीं डरते
हर्फ़[१] और मा'नी[२] के रिश्ता-हाए-आहन[३] से आदमी है वाबस्ता[४]
आदमी के दामन से ज़िंदगी है वाबस्ता
उस से तुम नहीं डरते
अनकही से डरते हो !
जो अभी नहीं आई, उस घड़ी से डरते हो !
उस घड़ी के आने की आगही[५] से डरते हो !

पहले भी तो गुज़रे हैं
दौर[६] नारसाई[७] के, बेरिया[८] ख़ुदाई के
फिर भी ये समझते हो, हेच[९] आर्ज़ूमंदी[१०]
ये शबे-ज़बां बंदी, हैं रहे-ख़ुदाबंदी[११]
तुम यही समझते हो, तुम मगर ये क्या जानो

लब[१२] अगर नहीं हिलते, हाथ जाग उठते हैं
हाथ जाग उठते हैं, राह का निशां बन कर
नूर[१३] की ज़बां बन कर
हाथ बोल उठते हैं सुब्ह की अज़ां[१४] बन कर
रौशनी से डरते हो !
रौशनी तो तुम भी हो, रौशनी तो हम भी हैं
रौशनी से डरते हो !

शहर की फ़सीलों पर
देव का जो साया था पाक[१५] हो गया आख़िर
अज़दहामे इन्सां[१६] से फ़र्द[१७] की नवा[१८] आई
ज़ात की सदा[१९] आई
राहे-शौक़[२०] में जैसे राहरौ[२१] का ख़ूं लपके
इक नया जुनूं[२२] लपके
आदमी छलक उट्ठे
आदमी हंसे देखो, शहर फिर बसे दखो
तुम अभी से डरते हो !
हां अभी तो तुम भी हो, हां अभी तो हम भी हैं
तुम अभी से डरते हो !

१- अक्षर, शब्द २- अर्थ ३- लौह सबंधं ४- संबद्ध ५- सूचना या जानकारी ६- काल ७- न पहुंचने ८- निश्छल ९- तुच्छ १०- आकांक्षा करना ११- ईश्वरीय राह १२- होंठ १३- प्रकाश १४- अज़ान, बांग १५- स्वच्छ, पवित्र १६- जन समूह १७- एक व्यक्ति १८- १९ आवाज़ २०- प्रेम मार्ग २१- राही २२- उन्माद

राही मासूम रज़ा

लफ़्ज़

मेरी पूंजी हैं यही लफ़्ज़[१] –
यही थोड़े से लफ़्ज़
मुफ़्त का माल समझ कर मैं लुटा रहा इस दौलते-बेपायां[२] को
जिस तसव्वुर[३] के लिए एक ही लफ़्ज़ बहुत था, उसे सौ लफ़्ज़ दिए
मैं इस इक़्लीमे-सुख़न[४] का कोई आवारा सा शहज़ादा था
मुझ को ये फ़िक्र न थी
मुझ को ये मालूम न था
लफ़्ज़ भी घिसते हैं, मिटते हैं, बिखर जाते हैं
मुझ को मालूम न था
कि हर इक लफ़्ज़ को सदियों ने संवारा होगा
ये जो आए हैं तो कितनों ने पुकारा होगा
मैं लुटाता रहा इस दौलते-बेपायां को
और अब, जब कि ज़माने को बताने के लिए
मेरे दिल में कई क़िस्से हैं, कई बातें हैं
देखता हूं तो मिरे पास कोई लफ़्ज़ नहीं

१- शब्द २- असीम धन ३- कल्पना ४- कथन रूपी देश

ज़ाहिदा ज़ैदी

हज़ारों रंग थे

हज़ारों रंग थे!
नीले, गुलाबी, कासनी, ऊदे,
रूपहली, शफ़्तई, पीले, सुनहरी, सुर्ख़ बादामी
हरे, आबी, शिहाबी, आस्मानी, बैंगनी, धानी
शराबी, शर्बती, भूरे, बसंती, चंपई, प्याज़ी
हिनाई, अर्ग़वानी, जामुनी, फ़ीरोज़ी, अंगूरी,
गुले-शफ़्तालू, काही, मूंगिया, नारंजी, उन्नाबी
लचकते, शोख़, चंचल, दिलरुबा, शीरीं[२]
तरन्नुम रेज़[३], नूर-अफ़शां[४], तरब-आगीं[५]
कभी साकित[६], कभी रक़्सां[७]
कभी ज़ाहिर, कभी पिन्हां[८]
कभी उड़ते फ़िज़ाओं में, कभी शाख़ों पे आ कर चहचहाते
कभी सरगोशियां करते, कभी हल्के सुरों में गुनगुनाते
कभी हंसते, महकते फूल के दामन में छुप कर बैठ जाते
कभी ठंडी हवा में लहलहाते
कभी बादल को जा कर घुरघुराते
कभी लहरों के रेले में मचलते
कभी गहराइयों में डूब जाते
मगर पहरों न मेरे हाथ आते !

हज़ारों रौशनी के ज़ाविये[9] थे
कहीं सीधे, कहीं तिरछे, कहीं गोल
कभी कुछ दूर, फिर नजदीक, चौकोर
थिरकते, कांपते, मुड़ते, ठहरते
फिसलते, फैलते, बढ़ते, सिमटते
कभी इक ख़ैराकुन[10] नुक़्ते[11] पे मर्कूज़[12]
कभी तो बेकरां[13] और गाहे[14] महदूद[15]
कभी बेताब, रक़्सां, पा-ब-जौलां[16]
कभी यकसर[17] तलातुम,[18] शो'ला-सामां[19]
कभी नर्मो-सुबक, ख़ामोश हैरां
मगर हर हाल में, हर पल गुरेज़ां[20] ...

अजब वो कारवाने-रंग[21] था, किरनों का मेला था
नहीं वो नूर का सैलाब[22] था, रंगों का रेला था
कोई तस्वीर बन सकती न थी
सीमाब-पा[23] रफ़्तार की ज़द[24] में

मगर अब एक धुंदली रौशनी है
सुर्मई सी है
मगर अब एक साकित रंग है
शायद सलेटी है
ख़मोशी ही ख़मोशी है...
मैं हरदम सुर्मई सी रौशनी में
सुर्मई रंगों में तस्वीरें बनाती हूं

मगर जब काविशे-यकरंग[25] से उकता सी जाती हूं
कलम की नोक तब दिल में चुभाती हूं,
किसी तस्वीर पे झुकती हूं,
उस पे क़तरा-हाए-ख़ूं[26] गिराती हूं
सुखा कर अपनी सांसों से,
किसी दीवार पर उस को सजाती हूं
उसे फिर देर तक तकती हूं
कुछ तस्कीन[27] पाती हूं ...

१- मनमोहक २- मीठे ३- संगीतमय ४- प्रकाश बिखेरने वाले ५- आनंददायक ६- मौन
७- नृत्यशील ८- निहित ९- कोण १०- चुंधियाने वाले ११- बिंदु १२- केंद्रित
१३- अथाह १४- कभी १५- सीमित १६- पांव में बेड़ी पहने १७- एकदम
१८- तूफ़ान के थपेड़े १९- आग की लपटें २०- बचते हुए २१- रंगों का क़ाफ़िला
२२- प्रकाश की बाढ़ २३- पारे के पांव ऐसी २४- पकड़ २५-एक ऐसी कोशिश
२६- लहू की बूंदें २७- शांति

'ज़ुबैर' रिज़वी

पराया एहसास

तुम किस सोच में डूब गई हो !

हाथ का पत्थर
पानी के सीने पर मारो
चोट तो पानी के आएगी
पानी चोट की ताब न ला कर
मौज़ों[१] की सूरत[२] में बहता
साहिल साहिल[३] सर पटकेगा
फिर ख़ुद ही
असली हालत पर आ जाएगा

तुम किस सोच में डूब गई हो
हाथ का पत्थर
पानी के सीने पर मारो
मैं पानी हूं !

१- तरंगों २- रूप ३- किनारे किनारे

साहिर लुधियानवी

ख़ूबसूरत मोड़

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाएं हम दोनों !

न मैं तुम से कोई उम्मीद रक्खूं दिलनवाज़ी की
न तुम मेरी तरफ़ देखो ग़लत अंदाज़ नज़रों से
न मेरे दिल की धड़कन लड़खड़ाए मेरी बातों में
न ज़ाहिर हो तुम्हारी कशमकश का राज़ नज़रों से

तुम्हें भी कोई उलझन रोकती है पेशक़दमी[१] से
मुझे भी लोग कहते हैं कि ये जल्वे पराए हैं
मिरे हमराह भी रुसवाइयां हैं मेरे माज़ी[२] की
तुम्हारे साथ भी गुज़री हुई रातों के साए हैं

तआरुफ़[३] रोग हो जाए तो उस का भूलना बेहतर
तअल्लुक़[४] बोझ बन जाए तो उस को तोड़ना अच्छा
वो अफ़साना जिसे तकमील[५] तक लाना न हो मुमकिन
उसे इक ख़ूबसूरत मोड़ दे कर छोड़ना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाएं हम दोनों !

१- आगे बढ़ने या पहल करने २- अतीत ३- परिचय ४- संबंध ५- पूर्णता

सागर निज़ामी

ग़ज़ल

काफ़िर गेसू[1] वालों की रात बसर यूं होती है
हुस्न हिफ़ाज़त करता है और जवानी सोती है

मुझ में तुझ में फ़र्क़ नहीं, मुझ में तुझ में फ़र्क़ है ये
तू दुनिया पर हंसता है, दुनिया मुझ पर हंसती है

सब्रो-सुकूं[2] दो दर्या हैं, भरते भरते भरते हैं
तस्कीं[3] दिल की बारिश है, होते होते होती है

जीने में क्या राहत[4] थी, मरने में तकलीफ़ है क्या
तब दुनिया क्यों हंसती थी, अब दुनिया क्यों रोती है

दिल की तो तशख़ीस[5] हुई, चारागरों[6] से पूछूंगा
दिल जब धक धक करता है, वो हालत क्या होती है

रात के आंसू ऐ 'सागर' फूलों में भर जाते हैं
सुब्हे-चमन[7] उस पानी से कलियों का मुंह धोती है

१- उद्दंड केशों २- संतोष तथा शांति ३- धैर्य ४- सुख ५- निदान ६- उपचारकों
७- वाटिका की सुबह

मोहिंदरसिंह बेदी 'सहर'

ग़ज़ल

आ रहे हैं मुझ को समझाने बहुत
अक़्ल वाले कम हैं दीवाने बहुत

साक़िया हम को मुरव्वत[१] चाहिए
शहर में वर्ना हैं मयख़ाने बहुत

क्या तग़ाफ़ुल[२] का अजब अंदाज़ है
जान कर बनते हैं अनजाने बहुत

आप भी आएं किसे इन्कार है
आए हैं पहले भी समझाने बहुत

ये हक़ीक़त[३] है कि मुझ को प्यार है
इस हक़ीक़त के हैं अफ़साने बहुत

ये जिगर, ये दिल, ये नींदें, ये क़रार[४]
इश्क़ में देने हैं नज़राने बहुत

ये दियारे-इश्क़ है इस में 'सहर'
बस्तियां कम कम हैं वीराने बहुत

१- लिहाज़, स्नेह २- उपेक्षा ३-वास्तविकता ४- शांति ५- भेंटें ६- प्रेम नगर

सरदार जाफ़री

मेरा सफ़र

फिर इक दिन ऐसा आएगा
आंखों के दिये बुझ जाएंगे
हाथों के कंवल कुम्हलाएंगे
और बर्गे-ज़बां[1] से नुत्क़ो-सदा[2]
की हर तितली उड़ जाएगी
इक काले समुंदर की तह में
कलियों की तरह से खिलती हुई
फूलों की तरह से हंसती हुई
सारी शक्लें खो जाएंगी
ख़ूं की गर्दिश,[3] दिल की धड़कन
सब रागनियां सो जाएंगी
और नीली फ़ज़ा[4] की मख़मल पर
हंसती हुई हीरे की ये कनी
ये मेरी जन्नत, मेरी ज़मीं
इस की सुब्हें, इस की शामें
बे जाने हुए, बे समझे हुए
इक मुश्ते-ग़ुबारे-इन्सां[5] पर
शबनम की तरह रो जाएंगी
हर चीज़ भुला दी जाएगी

यादों के हसीं बुतख़ाने[६] से
हर चीज़ उठा दी जाएगी
फिर कोई नहीं ये पूछेगा
'सरदार' कहां है महफ़िल में

लेकिन मैं यहां फिर आऊंगा
बच्चों के दहन[७] से बोलूंगा
चिड़ियों की ज़बां से गाऊंगा
जब बीज हंसेंगे धरती में
और कोंपलें अपनी उंगली से
मट्टी की तहों को छेड़ेंगी
मैं पत्ती पत्ती, कली कली
अपनी आंखें फिर खोलूंगा
सरसब्ज़ हथेली पर ले कर
शबनम के क़तरे तोलूंगा
मैं रंगे-हिना,[९] आहंगे-ग़ज़ल[१०]
अंदाज़े-सुख़न[११] बन जाऊंगा
रुख़सारे-उरूसे-नौ[१२] की तरह
हर आंचल से छन जाऊंगा
जाड़ों की हवाएं दामन में
जब फ़स्ले-ख़िज़ां[१३] को लाएंगी
रहरौ[१४] के जवां क़दमों के तले
सूखे हुए पत्तों से मेरे

हंसने की सदाएं[१५] आएंगी
धरती की सुनहरी सब नदियां
आकाश की नीली सब झीलें
हस्ती[१६] से मिरी भर जाएंगी
और सारा ज़माना देखेगा
हर क़िस्सा मिरा अफ़साना है
हर आशिक़ है 'सरदार' यहां
हर मा'शूक़ा 'सुल्ताना'[१७] है

मैं एक गुरेज़ां[१८] लम्हा हूं
अय्याम[१९] के अफ़सूं ख़ाने[२०] में
मैं एक तड़पता क़तरा हूं
मसरूफ़े-सफ़र[२१] जो रहता है
माज़ी[२२] की सुराही के दिल से
मस्तक़बिल[२३] के पैमाने में
मैं सोता हूं और जागता हूं
और जाग के फिर सो जाता हूं
सदि्दयों का पुराना खेल हूं में
मैं मर के अमर हो जाता हूं

१- जिह्वा रूपी पत्ते २- वाक्य शक्ति और वाणी ३- चक्र ४- वातावरण ५- मनुष्य रूपी एक मुट्ठी धूलि ६- मूर्तिगृह ७- मुंह ८- हरी भरी ९- मेंहदी का रंग १०- गीत का अलाप ११- बात या कविता करने का ढंग १२- नई दुलहन के कपोल १३- पतझड़ की ऋतु १४- राही १५- आवाज़ें १६- अस्तित्व १७- शायर की पत्नी का नाम १८- पलायनकर्ता १९- दिनों या समय २०- जादू घर २१- गतिमान २२- अतीत २३- भविष्य

सलाम मछलीशहरी

अंदेशा

''–आर्टिस्ट ! अपनी ये तस्वीर मुकम्मल कर ले !
हां ये होंट और भी पतले हों, ये आंखें और भी मस्त
लेकिन इन गालों की सुर्ख़ी को ज़रा कम कर दे
मैं ने शायद उन्हें मुझार्या हुआ पाया है
हलके आंसू से इन आंखों को ज़रा नम कर दे
मैं ने अफ़सुदा[१] निगाहों से यही समझा है
आज भी मैं ने सरे राह[२] उसे देखा है !
एक शहकार[३] इसे जल्द बना ले ऐ दोस्त
वर्ना तस्वीर का ख़ाका[४] ही बदलना होगा !!

१- उदास २- रास्ते में ३- श्रेष्ठ कलाकृति ४-रूप रेखा

सैफ़ुद्दीन 'सैफ़'

ग़ज़ल

राह आसान हो गई होगी
जान पहचान हो गई होगी

मौत से तेरे दर्दमंदों की
मुश्किल आसान हो गई होगी

फिर पल्ट कर निगाह नहीं आई
तुझ पे क़ुर्बान हो गई होगी

तेरी ज़ुल्फ़ों को छेड़ती थी सबा[१]
ख़ुद परीशान हो गई होगी

उन से भी छीन लोगे याद अपनी
जिन का ईमान हो गई होगी

दिल की तस्कीन[२] पूछते हैं आप
हां मिरी जान हो गई होगी

मरने वालों पे 'सैफ़' हैरत[३] क्यों
मौत आसान हो गई होगी

१- प्रभात समीर २- शांति ३-आश्चर्य

सैफ़ ज़ुल्फ़ी

ग़ज़ल

मैं कि इक कच्चा घरौंदा हूं भरी बरसात में
कौन मेरा साथ देगा इस अंधेरी रात में

दिल से मौजे-दर्द[१] उठे भी तो रो सकता नहीं
ज़ब्त की दीवार हाइल[२] है, मिरे जज़्बात में

ये मिरी कड़ियल जवानी, ये तिरे ग़म का शबाब[३]
इक तलातुम[४] करवटें लेता है, मेरी ज़ात में

काटता जाता हूं कड़ियां, बनते जाते हैं हिसार[५]
मैं बा-ई-जहद-मसलसल,[६] क़ैद हूं हालात में

तुम सिरिश्ते-ग़म[७] कहो इस को कि सोज़े-आगही[८]
हम दुखों का ज़िक्र करते हैं, ख़ुशी की बात में

१- पीड़ा की लहर २- बाधक ३- यौवन ४- तूफ़ान ५- चारदीवारियां ६- निरंतर संघर्ष के बावजूद ७- शोक स्वभाव ८- ज्ञान की तपन

शाज़ तमक्नत

ग़ज़ल

क्या क़ियामत है कि इक शख़्स का हो भी न सकूं
ज़िंदगी कौन सी दौलत है कि खो भी न सकूं

घर से निकलूं तो भरे शहर के हंगामे में
मैं वो मजबूर तिरी याद में रो भी न सकूं

दिन के पहलू से लगा रहता है अंदेशा-ए-शाम[१]
सुबह के ख़ौफ़ से नींद आए तो सो भी न सकूं

किस को समझाऊं कि दर्या से सराब[२] अच्छा है
पार उतर भी न सकूं, नाव डुबो भी न सकूं

'शाज़' मालूम हुआ अज्ज़-बयानी[३] क्या है
दिल में वो आग है लफ़्ज़ों[४] में समो भी न सकूं

१- रात का भय २ मरीचिका ३-विनय वर्णन ४- शब्दों

परवीन शाकिर

ग़ज़ल

पा-बा-गुल[१] हैं सब रिहाई की करे तद्बीर[२] कौन
दस्त-बस्ता[३] शहर में खोले मिरी ज़ंजीर कौन

मेरा सर हाज़िर है लेकिन मेरा मुन्सिफ़ देख ले
कर रहा है मेरी फ़र्दे-जुर्म[४] को तह्रीर[५] कौन

आज दरवाज़ों पे दस्तक जानी पहचानी सी है
आज मेरे नाम लाता है मिरी ताज़ीर[६] कौन

नींद जब्र ख़्वाबों से प्यारी हो तो ऐसे अहद[७] में
ख़्वाब देखे कौन और ख़्वाबों को दे ता'बीर[८] कौन

रेत अभी पिछले मकानों की न वापिस आई थी
फिर लबे-साहिल[९] घरौंदे कर गया ता'मीर[१०] कौन

सारे रिश्ते हिज्रतों[११] में साथ देते हैं तो फिर
शहर से जाते हुए होता है दामनगीर[१२] कौन

दुश्मनों के साथ मेरे दोस्त भी आज़ाद हैं
देखना है फेंकता है मुझ पे पहला तीर कौन

१- पांव फूलों से बंधे २- युक्ति ३- हाथ बांधे ४- अपराध पत्र ५- लिख रहा है ६- दंड
७- काल ८- स्वप्नकाल ९- तट पर १०-निर्माण ११- देश त्याग १२- पल्लू पकड़ने वाला

शिकेब जलाली

ग़ज़ल

जाती है धूप उजले परों को समेट के
ज़ख़्मों को अब गिनूंगा मैं बिस्तर पे लेट के

मैं हाथ की लकीरें मिटाने पे हूं बज़िद
गो जानता हूं नक़्श[1] नहीं ये सलेट के

दुनिया को कुछ ख़बर नहीं क्या हादिसा हुआ
फैंका था उस ने संग[2] गुलों[3] में लपेट के

फ़व्वारे की तरह न उगल दे हर एक बात
कम कम वो बोलते हैं जो गहरे हैं पेट. के

एक नुक़रई[4] खनक के सिवा क्या मिला 'शिकेब'
टुकड़े ये मुझ से कहते हैं टूटी प्लेट के

१- रेखा चित्र २- पत्थर ३- फूलों ४-चांदी की

शकील बदायूनी

ग़ज़ल

सुबह का अफ़साना कह कर शाम से
खेलता हूं गर्दिशे-अय्याम[१] से

उन की याद उन की तमन्ना उन का ग़म
कट रही है ज़िंदगी आराम से

इश्क़ में आएंगी वो भी साअतें[२]
काम निकलेगा दिले-नाकाम से

लाख मैं दीवाना-ओ-रुसवा सही
फिर भी इक निस्बत[३] है तेरे नाम से

सुब्हे-गुलशन[४] देखिए क्या गुल खिलाए
कुछ हवा बदली हुई है शाम से

हाय मेरा मातमे-तश्नालबी[५]
शीशा[६] मिल कर रो रहा है जाम से

हर नफ़स[७] महसूस होता है 'शकील'
आ रहे हैं नामा-ओ-पैग़ाम[८] से

१- कालचक्र २- क्षण ३- संबंध ४- उपवन की सुबह ५- प्यास का शोक ६- बोतल
७- श्वास ८- पत्र तथा संदेश (प्रिया के)

शमीम हन्फ़ी

ग़ज़ल

अपनी कमीनगी का सज़ावार मैं ही था
दर्या में खुद को छोड़ के उस पार मैं ही था

रुसवाइयों का दश्त[१] बदन की ज़मीन थी
ये और बात है कि ज़मींदार मैं ही था

कितने कटे फटे हुए मंज़र[२] नज़र में थे
सच है कि अपनी जान का आज़ार[३] मैं ही था

इक मौजे-ख़ूं[४] ने मुझ से जुदा कर दिया मुझे
इस अंजुमन[५] में साहिबे-किरदार[६] मैं ही था

महरूमियों की भीड़ थी पीछे लगी हुई
लाहासिली[७] का क़ाफ़िला सालार मैं ही था

हर मंज़िले-मुराद थी ओझल निगाह से
हर रास्ते में क़हर की दीवार मैं ही था

ऐसा लगा कि सारे महल बैठ जाएंगे
क़िस्सा ये है कि ज़लज़ला-आसार[८] मैं ही था

१- जंगल २- दृश्य ३- रोग ४- लहू तरंग ५- सभा
६- चरित्रवान ७- अप्राप्ति ८- भूकंप का लक्षण

रज़ी अख़्तर 'शौक़'

ग़ज़ल

ये कौन डूब गया और उभर गया मुझ में
ये कौन साए की सूरत[1] गुज़र गया मुझ में

ये किस के सोग में शोरीदा-हाल[2] फिरता हूं
वो कौन शख़्स था ऐसा कि भर गया मुझ में

अजब हवाए-बहारां[3] ने चारासाज़ी की
वो ज़ख़्म जिस को न भरना था भर गया मुझ में

वो आदमी कि जो पत्थर था जी रहा है अभी
जो आईना था वो कब का बिखर गया मुझ में

विसाल[5] क्या कि वो जब भी क़रीब से गुज़रा
तो यूं लगा कि कोई रक़्स[6] कर गया मुझ में

वो साथ था तो अजब धूप-छाओं रहती थी
बस अब तो एक ही मौसम ठहर गया मुझ में

१- भांति २- दुर्दशाग्रस्त ३- वसंत पवन ४- चिकित्सा ५- मिलन ६- नृत्य

शौकत थानवी

फ़ेमिली प्लानिंग

ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर[1] पैदा न हो
याद रख पछताएगा तू मेरे घर पैदा न हो
तुझ को पैदाइश[2] का हक़ तो है मगर पैदा न हो
मैं तिरा एहसान मानूंगा अगर पैदा न हो
ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर पैदा न हो

हम ने ये माना कि पैदा हो गया, खाएगा क्या
घर में दाने ही न पाएगा तो भुनवाएगा क्या
इस निखट्टू बाप से मांगेगा क्या, पाएगा क्या
देख कहना मान ले जाने-पिदर[3] पैदा न हो
ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर पैदा न हो

यूं भी तेरे भाई बहनों की है घर में रेलपेल
बिलबिलाते फिर रहे हैं हर तरफ़ जो बेनुकेल
मेरे घर के इन चिराग़ों को मयस्सर[4] कब है तेल
बुझ के रह जाएगा तू भी, भूल कर पैदा न हो
ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर पैदा न हो

पालते हैं नाज़ से कुछ लोग कुत्ते बिल्लियां
दूध वो जितना पिएं और खाएं जितनी रोटियां

ये फ़राग़त[५] ऐ मेरे बच्चे मुझे हासिल नहीं
उन के घर पैदा हो और बन कर बशर[६] पैदा न हो
ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर पैदा न हो

यूं ही मैं कप्तान हूं औलाद की पूरी है टीम
मुफ़लिसी में हो रही है और भी हालत सक़ीम[७]
अपने ज़िंदा बाप का कहलाएगा तू भी यतीम
बख़्श दे मुझ को मेरे नूरे-नज़र पैदा न हो
ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख़्ते-जिगर पैदा न हो

१- हृदय के टुकड़े २- पैदा होने ३- पिता के जीवन ४- प्राप्त ५- सामर्थ्य ६- मनुष्य
७- बदहाल

शहरयार

नया अमृत

दवाओं की अलमारियों से सजी इक दोकां में
मरीज़ों के अंबोह[१] में मुज्महिल[२] सा
इक इन्सां खड़ा है
जो इक नीली कुबड़ी सी शीशी के सीने पे लिखे हुए
एक इक हर्फ़[३] को ग़ौर से पढ़ रहा है
मगर उस पे तो 'जहर' लिखा हुआ है
इस इन्सान को क्या मरज़[४] है
ये कैसी दवा है !

१- समूह २- शिथिल ३- अक्षर ४- रोग

शहज़ाद अहमद

ग़ज़ल

ख़त में उस' को कैसे लिखें क्या पाना और क्या खोना है
दूरी में रं. हो नहीं सकता जो आपस में होना है

नींद का पंछी आ पहुंचा है, वहशी दिल की बात न सुन
मिल भी गए तो आख़िर थक कर गहरी नींद ही सोना है

वो आया तो सारे मौसम बदले बदले लगते हैं
या कांटों की सेज बिछी थी या फूलों का बिछोना है

अभी तो ख़ुश्क बहुत है मौसम, बारिश हो तो सोचेंगे
हम ने अपने अमानों को किस मट्टी में बोना है

हम को नसीहत करने वाले ख़ुद भी यही कुछ करते हैं
तुम क्या क़िस्सा ले बैठे हो, ये उम्रों का रोना है

कांच की गुड़िया ताक़ में कब तक आप सजाए रखेंगे
आज नहीं तो कल टूटेगा, जिस का नाम खिलोना है

बड़े बड़े दावे हैं लेकिन छोटे छोटे क़द 'शहज़ादे'
फांकनी है कुछ ख़ाक इन को, कुछ पानी इन्हें बिलोना है

नौबहार 'साबिर'

ग़ज़ल

बूंदी पानी की हूं थोड़ी सी हवा है मुझ में
इस बिज़ाअ़त[१] पे भी क्या तुर्फ़ा[२] इना[३] है मुझ में

ये जो इक हश्र[४] शबो-रोज़[५] बपा[६] है मुझ में
हो न हो और भी कुछ मेरे सिवा है मुझ में

सफ़्हे-दह्र[७] पे इक राज़ की तहरीर[८] हूं मैं
हर कोई पढ़ नहीं सकता जो लिखा है मुझ में

कभी शबनम की लताफ़त[९] कभी शो'ले की लपक
लम्हा लम्हा[१०] ये बदलता हुआ क्या है मुझ में

शह्र का शह्र हो जब अर्सए-महशर[११] की तरह
कौन सुनता है जो कुहराम[१२] मचा है मुझ में

वक़्त ने कर दिया 'साबिर' मुझे सहरा-ब-किनार[१३]
इक ज़माने में समुंदर भी बहा है मुझ में

१- पूंजी २- विचित्र ३- अहं ४- प्रलय ५- रात दिन ६-मचा हुआ ७- संसार रूपी पन्ने ८- लेख ९- कोमलता १०- क्षण प्रतिक्षण ११- प्रलय क्षेत्र १२- शोर १३- मरुस्थल के अंक में

'सहबा' अख़्तर

दोहे

क़ब वो स्वयंवर दिन आएगा होगा अंत वियोग
सपनों की संजोगिता, तुझ से कब होगा संजोग

०

बांसुरी हाथ में पकड़े मुंह पर छिड़के नीला रंग
सब ही किशन बनें तो राधा नाचे किस के संग

०

इक इक अंग उजाला नाचे किरनें चूमें गात
हम सूरजबंसी होते तो करते तुझ से बात

०

अंतरयामी के दर्शन को अंतरज्ञानी जाए
'सहबा जी' बनबास से कोई राम नहीं पाए

०

'सहबा जी' क्यों मन की गुफा में बैठे रहे चित साध
आओ चंदन रात के धन को बांट लें आधो आध

सैयद ज़मीर जाफ़री

ग़ज़ल

पिन खुला, टाई खुली, बकलस खुले, कालर खुला
खुलते खुलते डेढ़ घंटे में कहीं अफ़सर खुला

आठ दस की आंख फूटी, आठ दस का सर खुला
तो ख़तीबे-शहर[१] की तक़्रीर का जौहर[२] खुला

सच है मग़रिब[३] और मशरिक़[४] एक हो सकते नहीं
उस तरफ़ बीवी खुली है इस तरफ़ शौहर खुला

तीरगी[५] क़िस्मत में आती है तो जाती ही नहीं
मेरे घर के बिलमुक़ाबिल[६] कोयला सेंटर खुला

कोई टोके रोके उन को ये भला किस की मजाल
मौल्वी गुलशेर है क़स्बे में शेरे-नर[७] खुला

उन का दरवाज़ा था मुझ से भी सिवा[८] मुश्ताक़े-दीद[९]
मैं ने बाहर खोलना चाहा तो वो अंदर खुला

आदमी एहसासे-मन्सब[१०] के मुताबिक़ क़ैद है
देख लो डिप्टी कमिशनर बंद है रीडर खुला

१- नगर के वक्ता २- गुण ३-पश्चिम ४- पूर्व ५- अंधकार ६- सामने ७- पुरुष रूपी शेर
८- अधिक ९- दर्शनाभिलाषी १०- पद के ख़याल

अहमद जफ़र

ज़ीने

फूल की पत्ती पे शबनम मेरे अश्कों[१] की तरह
मेरी आंखें दो कंवल हैं ज़िंदगी की झील में
पेड़ की शाख़ें मिरे बाज़ू – बुलाते हैं किसे
रहगुज़र[२] की धूल मेरी सांस है

इब्तिदा[३] आवाज़ थी मेरे लिए
इंतिहा[४] खंजर मिरे सीने में है
आईने पत्थर बने मेरे लिए
और पत्थर आईना-रू[५] कब हुए

क़तरा क़तरा मौत मेरी आर्ज़ू
लहज़ा-लहज़ा[६] जुस्तुजू[७] मेरा लहू
सोच भी ज़ंजीर है मेरे लिए
बात भी तक़सीर[८] है मेरे लिए

आईना देखूं तो दिल जलने लगे
कुछ न देखूं तो ज़माने के लिए
एक अंधे की तरह बैठा रहूं !

१- आंसुओं २- मार्ग ३- प्रारंभ ४- अंत ५- आइने ऐसे ६- क्षण क्षण ७-तलाश ८-अपराध

'ज़हीर' काश्मीरी

ग़ज़ल

लौहे-मज़ार[१] देख के जी दंग रह गया
हर एक सर के साथ फ़क़त[२] संग[३] रह गया

बदनाम हो के इश्क़ में हम सुर्ख़रू[४] हुए
अच्छा हुआ कि नाम गया नंग रह गया

होती न हम को साया-ए-दीवार की तलाश
दामाने-हुस्ने-यार[५] बहुत तंग रह गया

सीरत[६] न हो तो आरिज़ो-रुख़सार[७] सब ग़लत
ख़ुशबू उड़ी तो फूल फ़क़त रंग रह गया

कितने ही इंक़िलाब[८] शिकन दर शिकन[९] मिले
आज अपनी शक्ल देख के मैं दंग रह गया

अपने गले में अपनी ही बाहों को डालिए
जीने का अब तो एक यही ढंग रह गया

१- क़ब्र पर लगी तख़्ती (जिस पर नाम, देहांत की तिथि आदि लिखे होते हैं) २- केवल ३- पत्थर
४- सफल ५- प्रेयसी का सौंदर्य रूपी दामन ६- चरित्र ७- कपोल, गाल ८- परिवर्तन
९- झुर्रें पर झुर्रें

अब्दुल हमीद 'अदम'

ग़ज़ल

मयकदा[१] था चांदनी थी मैं न था
इक मुजस्सम[२] बेख़ुदी[३] थी मैं न था

इश्क़ जब दम तोड़ता था तुम न थे
मौत जब सर धुन रही थी मैं न था

तूर पर छेड़ा था जिस ने आप को
वो मिरी दीवानगी थी मैं न था[४]

वो हसीं बैठा था जब मेरे क़रीब
लज़्ज़ते-हमसायगी[५] थी मैं न था

मयकदे के मोड़ पर रुकती हुई
मुद्दतों की तशनगी[६] थी मैं न था

मैं और उस गुंचा-दहन[७] की आर्ज़ू[८]
आर्ज़ू की सादगी थी मैं न था

गेसुओं[९] के साए में आरामकश[१०]
सरबरहना[११] ज़िंदगी थी मैं न था

दैरो-का'बा[१२] 'अदम' हैरत फ़ुरोश[१३]
दो जहां की बदज़नी[१४] थी मैं न था

१- शराबख़ाना २- साकार ३- आत्मविसर्जन ४- तूर नामक पहाड़ पर हज़रत मूसा से ख़ुदा ने बातें की थीं–उस ओर संकेत है ५- पड़ोस या सामीप्य का आनंद ६- प्यास ७- कली ऐसे मुंह वाले ८- कामना ९- केशों १०- विश्रामकर्ता ११- नंगे सिरे वाली १२- मंदिर मसजिद १३- आश्चर्य विक्रेता १४- मिथ्या संदेह

उन्वान चिश्ती

ग़ज़ल

कितने मौसम बीत गए हैं दुख सुख के तन्हाई में
दर्द की झील नहीं सूखी है आंखों की अंगनाई में

सच सच कहना, ऐ दिले-नादां, बात है क्या रुसवाई में
सैंकड़ों आंखें झांक रही हैं, क्यों मेरी तन्हाई में

रूप की धूप भी काम न आई, दर्द की लहरें जाग उट्ठीं
दिल की चोट उभर आई है, यादों की पुरवाई में

शहर से गांव में इक दीवाना साहब बन कर क्या आया
ज़ुल्फ़ें महकीं, आंचल ढलके, अंगनाई अंगनाई में

अपने जलते सपनों की परछाईं मिली उन में 'उन्वान'
जब भी झांका उस की ठंडी आंखों की गहराई में

आरिफ़ अब्दुल मतीन

ग़ज़ल

जब ज़ियां[१] का गम उभर आया तो दिल डूबा बहुत
थे बुरे, ख़ुद को मगर समझा किए अच्छा बहुत

मैं किरनों का तमन्नाई[२] था, किरनों के तुफ़ैल[३]
मेरे अपने जिस्म से साया मिरा उलझा बहुत

ख़्वाहिशों के बहर[४] में गिर्दाब[५] की सूरत जिया
अपनी सेराबी[६] की ख़ातिर तश्ना-लब[७] धूमा बहुत

वक़्त की दहशत ने मेरे ख़ालो-खद[८] संवला दिए
आईना देखा तो मुझ को ख़ुद से डर आया बहुत

अक्स[९] अपना देखने की आर्ज़ू मुझ को भी थी
झील पर पहुंचा तो पानी उस का था गदला बहुत

अपनी तन्हाई का मैं ने जिस को समझा था इलाज
उस के मिलने पर भी लगता है कि हूं तन्हा बहुत

अपनी ज़रपाशी[१०] पे 'आरिफ़' उस को कितना नाज़ था
धूप कजलाई तो सूरज ख़ुद ही शर्माया बहुत

१- हानि २- इच्छुक ३- कारण ४- सागर ५- भंवर ६- सिंचाई ७- प्यासा ८-नैन नक़्श
९- प्रतिबिंब १०- सोना छिड़कने या लुटाने

जमीलुद्दीन आली

दोहे

एक तो ये घनघोर बदरिया फिर बिरहा की मार
बूंद पड़े है बदन पे ऐसे जैसे लगे कटार

o

साजन हम से मिले भी लेकिन ऐसे मिले कि हाय
जैसे सूखे खेत से बादल बिन बरसे उड़ जाय

o

मन के एक अलीबाबा के पीछे लाखों चोर
इन्हीं चोरों में मन यूं घूमे ज्यों जंगल में मोर

o

तह में भी है हाल वही जो तह के ऊपर हाल
मछली बच कर जाए कहां जब जल ही सारा जाल

o

उम्र गवां कर हम को इतनी आज हुई पहचान
चढ़ी नदी और उतर गई पर घर हो गए वीरान

o

जनम मरन का साथ था जिन का, उन्हें भी हम से बैर
वापिस ले चल अब तो 'आली' हो गई जग की सैर

अहमद 'फ़राज़'

ग़ज़ल

अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख़्वाबों में मिलें
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें

ढूंड उजड़े हुए लोगों में वफ़ा के मोती
ये ख़ज़ाने तुझे मुमकिन है ख़राबों[१] में मिलें

तू ख़ुदा है न तिरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इन्सां हैं तो क्यों इतने हिजाबों[२] में मिलें

ग़म भी नश्शा है, इसे और फ़ुज़ुं[३] होने दे
जां[४] पिघलती है, शराबें जो शराबों में मिलें

आज हम दार[५] पे खैंचे गए जिन बातों पर
क्या अजब[६] कल वो ज़माने के निसाबों[७] में मिलें

अब न वो हैं, न वो तू है, न वो माज़ी[८] है 'फ़राज़'
जैसे दो शख़्स तमन्ना के सराबों[९] में मिलें

१- उजड़े घरों में २- पर्दों ३- तेज़ ४- जान ५- सूली ६- विचित्र ७- पाठ्य पुस्तकों ८- अतीत ९-मरीचिकाओं

फ़ारिग़ बुख़ारी

ग़ज़ल

अपने ही साए में था, मैं शायद छुपा हुआ
जब ख़ुद ही हट गया तो कहीं रास्ता मिला

दीवार फांद कर न यहां आएगा कोई
रहने दो ज़ख़्मे-दिल का दरीचा खुला हुआ

निकला अगर तो हाथ न आऊंगा फिर कभी
कब से हूं इस बदन की कमां में तना हुआ

बेदार[१] हैं शऊर[२] की किरनें कहीं कहीं
हर ज़ेहन[३] में है वहम[४] का तारीक रास्ता

जूए-नशात[६] बन के बहा ले गई मुझे
आवाज़ थी कि साज़े-जवानी का अक्स[७] था

इतना भी कौन होगा हलाके-फ़रेबे-रंग[८]
शब[९] उस ने मय[१०] जो पी है तो मुझ को नशा हुआ

'फ़ारिग़' हवाए-दर्द[११] ने लौटा दिया जिसे
आएगा एक दिन मेरा घर पूछता हुआ

१- जाग्रत २- विवेक ३- मस्तिष्क ४- भ्रम ५- अंधेरा ६- आनंद
७- प्रतिबिंब ८- रंगों के धोखे का शिकार ९- रात १०- शराब ११- पीड़ा पवन

फ़िराक़ गोरखपुरी

अशआर

ज़रा विसाल[1] के बाद आईना तो देख ऐ दोस्त
तिरे जमाल[2] की दोशीज़गी[3] निखर आई

o

मैं देर तक तुझे ख़ुद ही न रोकता लेकिन
तू जिस अदा से उठा है उसी का रोना है

o

हम से क्या हो सका मोहब्बत में
तुम ने तो ख़ैर, बेवफ़ाई की

o

मुझे ख़बर नहीं ऐ हमदमो[4] सुना ये है
कि देर देर तक अब मैं उदास रहता हूं

o

आज आंखों में काट ले शबे-हिज्र[5]
ज़िंदगानी पड़ी है, सो लेना

o

थी यूं तो शामे-हिज्र[6] मगर पिछली रात को
वो दर्द उठा 'फ़िराक़' कि मैं मुस्करा दिया

o

आज आग़ोश[7] में था और कोई
देर तक हम तुझे न भूल सके

o

तिरे सिवा भी हसीं हैं बक़ौल[8] उन आंखों के
दिल इस को मान भी लेता है दुःख भी जाता है

o

यकलख़्त[9] चौंक उठा हूं जिस दम पड़ी है आंख
आए तुम आज भूली हुई याद की तरह

o

शाम भी थी धुआं धुआं, हुस्न भी था उदास उदास
दिल को कई कहानियां याद सी आ के रह गईं

o

मैं आज सिर्फ़ मोहब्बत के ग़म करूंगा याद
ये और बात है कि तेरी याद भी आ जाए

o

हमें भी देख जो इस दर्द से कुछ होश में आए
अरे दीवाना हो जाना मोहब्बत में तो आसां है

o

कुछ आदमी को हैं मज़बूरियां भी दुनिया में
अरे वो दर्दे-मोहब्बत सही तो क्या मर जाएं

o

न समझने की ये बातें हैं न समझाने की
ज़िंदगी उचटी हुई नींद है दीवाने की

१- मिलन, संभोग २-सौंदर्य ३- कौमार्य ४- साथियो ५, ६- विरह की रात ७- अंक
८- कथनानुसार ९- एकाएक

फुरक़त काकोरवी

पुराने जूते

गर्दिशे-अफ़लाक[१] के मारे हुए जूते वो तमाम
इक सड़क के मोड़ पर रखे थे ब-सद-एहतिराम[२]
उन पे टूटे पड़ रहे थे मुफ़्लिसाने-ख़ासो-आम[३]
मैं ने भी गर्दन बढ़ा कर पूछे उन में इक के दाम
बोला मुद्दत बाद इन जूतों का अब उट्ठा है पाल
और इन जूतों में हर जूता है आप अपनी मिसाल

एक जूता उस में था जो तजरुबों का शाहकार[४]
और किसी भागे हुए अंग्रेज़ की थी यादगार
बोला मैं इस देस में चलता रहा हूं बार बार
हिंदु-ओ-मुस्लिम हैं अब तक मेरे अफ़सूं[५] का शिकार
'पैंट' वालों में अभी तक मेरी वुक़अत[६] है वही
'कद्रे-गौहर शाह दानद या बदानद जौहरी'[७]

उन में इक तगड़ा सा जूता एक डी एस पी का था
उम्र भर जो बेगुनाहों के सरों पर था चला
कितनी कितनी रिश्वतें साहिब को था खिलवा चुका
जिस्म जो बेजान था लेकिन तले का था कड़ा
मैं ने दस आने लगाए, उस पे बोला ऐ सखी
सात पुश्तों ने तिरी पहना था ये जूता कभी

एक बर्मी सैंडल भी थी वहां मस्तानावार
इस तरह रखी हुई थी जैसे पत्तों में अनार
ये किसी कालेज की लड़की की रही थी ग़मगुसार
नौजवां उश्शाक[९] के जज़्बे थे इस के ज़ेरबार[१०]
बोला मैं ये आप की ठोकर में है क्या ख़ाल ख़ाल[११]
बोली ये हैं नौजवां उश्शाक़ की चंदिया के बाल

सैंडिल इक जिस के दोनों बंद थे लटके हुए
जो जवानी में थी कितनी इज़्ज़तें लूटे हुए
सैकड़ों उश्शाक़ की चंदियों का रस चूसे हुए
बोली मैं हाज़िर हूं गर पैसे हों कुछ टूटे हुए
नौकरों पे चल के तिगनी नाच मैं नचवाऊंगी
जिस की चंदिया आप फ़र्माएंगे चट कर जाऊंगी

मैं ने सोचा ले भी लूं इस को, जब आया ख़याल
दिल ये बोला सोच लो मज़बूत हैं चंदिया के बाल
गर किसी दिन तुम ने बेगम से ज़रा की क़ीलो-क़ाल[१२]
जान लो फिर इस ख़रीदारी का जो कुछ है मआल[१३]
ये ख़याल आया तो मैं दोक़ां से सरपट चल दिया
रास्ता भर लब[१४] पे मेरे कलमए-लाहौल[१५] था

शैख़[१६] 'घीसू' कर के इक मोची से पहले साज़-बाज़
उम्र में पहले पहल मस्जिद गए पढ़ने नमाज़

दर्मियां में तोड़ कर ये अपनी नीयत हीला-साज़[१७]
झाड़ लाए एक चप्पल जो थी बेहद दिलनवाज़[१९]
ये जवां चप्पल थी अपने हाल पर वां[१९] नौहा-ख़्वा[२०]
और मियां घीसू के थी ईमान की रतबुललिसां[२१]

१- संसार चक्र २- सम्मानपूर्वक ३- सामान्य तथा विशेष निर्धन ४-महान कलाकृति ५- जादू ६- सम्मान ७- हीरे की क्द्र बादशाह जानता है या जौहरी ८- सहानुभूतिकर्ता ९- आशिक् का बहुवचन १०- ऋणी ११- कहीं कहीं १२- ऊंची नीची बात १३- परिणाम १४- होठों १५- घृणा और उपेक्षा सूचक वाक्य १६- धर्म गुरु (मौलवी) १७- बहानेबाज़ी १८- मन मोहिनी १९-वहां २०- आर्तनाद कर रही २१- प्रशंसक

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

चंद रोज़ और मिरी जान !

चंद रोज़ और मिरी जान ! फ़क़त[१] चंद ही रोज़ !
ज़ुल्म की छांव में दम लेने पे मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सह लें, तड़प लें, रो लें
अपने अजदाद[२] की मीरास है, मा'ज़ूर[३] हैं हम

जिस्म पर क़ैद है, जज़्बात पे ज़ंजीरें हैं
फ़िक्र[४] महबूस[५] है, गुफ़्तार[६] पे ता'ज़ीरें[७] हैं

अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिए जाते हैं
ज़िंदगी क्या किसी मुफ़्लिस की क़बा[८] है जिस में
हर घड़ी दर्द के पेबंद लगे जाते हैं

लेकिन अब ज़ुल्म की मीयाद के दिन थोड़े हैं
इक ज़रा सब्र कि फ़र्याद के दिन थोड़े हैं

अर्सए-दहर[९] की झुलसी हुई वीरानी में
हम को रहना है, पे यूं ही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथों का बेनाम, गिरांबार सितम[१०]
आज सहना है, पे यूं ही तो नहीं सहना है

ये तिरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम[११] की गर्द
अपनी दो रोज़ा जवानी की शिकस्तों का शुमार[१२]

चांदनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द
दिल की बेसूद[१३] तड़प, जिस्म की मायूस पुकार

चंद रोज़ और मिरी जान ! फ़क़्त चंद ही रोज़

१- केवल २- पुरखों ३- विवश ४- सोच ५- बंदी ६- बोलने ७- दंड ८- निर्धन का चुग़ा
९- संसार क्षेत्र १०- भारी अत्याचार ११- दुखों १२- गिनती १३- व्यर्थ

क़तील शिफ़ाई

ग़ज़ल

अंगड़ाई पर अंगड़ाई लेती है, रात जुदाई की
तुम क्या समझो, तुम क्या जानो, बात मिरी तन्हाई की

कौन सियाही घोल रहा था वक़्त के बहते दर्या में
मैं ने आंख झुकी देखी है, आज किसी हरजाई की

टूट गए सैयाल नगीने,[१] फूट बहे रुख़सारों[२] पर
देखो मेरा साथ न देना, बात है ये रुसवाई की

वस्ल[३] की रात न जाने क्यों इसरार[४] था उन को जाने पर
वक़्त से पहले डूब गए, तारों ने बड़ी दानाई की

आप के होते दुनिया वाले मेरे दिल पर राज करें
आप से मुझ को शिकवा है, ख़ुद आप ने बेपरवाई की

उड़ते उड़ते आस का पंछी दूर उफ़ुक़[५] में डूब गया
रोते रोते बैठ गई आवाज़ किसी सौदाई[६] की

१- तरल रत्न २- गालों ३- मिलन ४- अनुरोध ५- क्षितिज ६- विक्षिप्त, प्रेमी

कृष्ण मोहन

रेज़ा रेज़ा

मैं बहुत फैला हुआ हूं !
जा-ब-जा बिखरा पड़ा हूं दूर दूर
रेज़ा-रेज़ा,[1] लख़्त-लख़्त[2]

मेरी दाईं टांग है जापान में
और बाईं नार्वे
मेरी दोनों बाहें इंग्लिस्तान में
मेरी आंखें जरमनी में हैं तो होंट ईरान में
एल्प्स पर मेरा जिगर है, बहरे-काहल में है सर
और पैरिस में कमर
मास्को में है दिमाग़
नाक है डेनमार्क में
और अफ़रीक़ा में दांत

रेज़ा-रेज़ा, लख़्त-लख़्त
चांद पर भी घूमता रहता हूं मैं
और ख़ला[3] में झूमता रहता हूं मैं

मेरे दोनों कान हैं भूटान में
मेरे रुख़सार[4] कज़ाकिस्तान में
चीन में मेरी जबीं[5]

आत्मा मेरी है हिंदोस्तान में

सीना है तुर्की में और इटली में पेट
ख़ुद बिखर कर सारे आलम[६] को लिया मैं ने समेट

१- कण कण २- टुकड़ा टुकड़ा ३- अंतरिक्ष ४- कपोल, गाल ५- माथा ६- संसार

क़ैसरुल जाफ़री

ग़ज़ल

ये दौरे-नामुरादी,[१] हाए यूं महसूस होता है
मैं अपनी क़ब्र पर ख़ुद पढ़ रहा हूं फ़ातिहा[२] जैसे

हम अपने दिल की बर्बादी का क़िस्सा सुन के यूं चुप हैं
किसी दुश्मन पे गुज़रा हो ये सारा वाक़िया[३] जैसे

ये कैसी रहगुज़र[४] है, रौशनी तलवों में चुभती है
क़िसी ने तोड़ कर बिखरा दिया हो आईना जैसे

मुसाफ़िर चलते चलते थक गए मंज़िल नहीं मिलती
क़दम के साथ बढ़ता जा रहा हो फ़ासिला जैसे

ज़माना हो गया 'क़ैसर' मगर महसूस होता है
अभी गुज़रा हो दिल के टूटने का हादिसा[५] जैसे

१- असफ़लताओं का युग २- क़ुरान की पहली सूरत, मुरदे की नियाज़ ३- घटना ४- मार्ग
५- दुर्घटना

कैफ़ी आज़मी

मकान

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फ़ुटपाथ पे नींद आएगी
सब उठो, मैं भी उठूं, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी

ये ज़मीं तब भी निगल लेने पे आमादा[१] थी
पांओ जब टूटती शाख़ों से उतारे हम ने
इन मकानों को ख़बर है न मकीनों[२] को ख़बर
उन दिनों की जो गुफ़ाओं में गुज़ारे हम ने

हाथ ढलते गए सांचे में तो थकते कैसे
नक़्श[३] के बाद नए नक़्श निखारे हम ने
की ये दीवार बुलंद,[४] और बुलंद, और बुलंद
बामो-दर[५] और, ज़रा संवारे हम ने

आंधियां तोड़ लिया करती थीं शम्ओं की लवें
जड़ दिए इस लिए बिजली के सितारे हम ने
बन गया क़स्र[६] तो पहरे पे कोई बैठ गया
सो रहे ख़ाक में हम शोरिशे-तामीर[७] लिए

अपनी नस नस में लिए मेहनते-पैहम[८] की थकन
बंद आंखों में इसी क़स्र की तस्वीर लिए

दिन पिघलता है उसी तरह सरों पर अब तक
रात आंखों में खटकती है ये तीर लिए

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फ़ुटपाथ पे नींद आएगी
सब उठो, मैं भी उठूं, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी

१- तत्पर २- वासियों ३- रेखाचित्र ४- ऊंची ५- दरवाज़े और छतें ६- महल ७- निर्माण का वलवला ८- निरंतर परिश्रम

असरारुलहक़ 'मजाज़'

ग़ज़ल

कुछ तुझ को ख़बर है हम क्या क्या, ऐ शोरिशे-दौरां[1] भूल गए
वो ज़ुल्फ़-परीशां[2] भूल गए, वो दीदए-गिरियां[3] भूल गए

ऐ शौक़े-नज़ारा क्या कहिए, नज़रों में कोई सूरत ही नहीं
ऐ ज़ौक़े-तसव्वुर[4] क्या कीजे, हम सूरते-जानां[5] भूल गए

अब गुल[6] से नज़र मिलती ही नहीं, अब दिल की कली खिलती ही नहीं
ऐ फ़स्ले-बहारां[7] रुख़सत हो, हम लुत्फ़े-बहारां भूल गए

सब का मुदावा[8] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके
सब के तो गरेबां सी डाले, अपना ही गरेबां भूल गए

ये अपनी वफ़ा का आलम[9] है, अब उन की जफ़ा[10] को क्या कहिए
इक नश्तरे-ज़हर-आगीं[11] रख कर, नज़दीके-रगे-जां[12] भूल गए

१-सांसारिक कोलाहल २- बिखरे केश ३- सजल नेत्र ४- दृश्य देखने (प्रिया दर्शन) का शौक ५- प्रिया की मुखाकृति ६- फूल ७- वसंत ऋतु ८- इलाज ९- स्थिति १०- विमुखता या अत्याचार ११- विष भरा नश्तर १२- जीवन नाड़ी के निकट

मजीद अहमद

होटल में

बादल गरजा गिरे सुनहरी पर्दे दिलों दरीचों पर

बंद हुए दो गोल पपोटे, चोंच में दब गई गरम ज़बान
छुरी चली हल्कम[१] पे, तड़पा तपते तवे पे तड़ख़ता मास
सज गए मेज़ पे मय के प्याले, तश्तों में पकवान

छत पर बारिश, नीचे उजले कालर, गदली अंतड़ियां
हंसते मुख, डकराती क़द्रें[२] भूकी माया के सब मान

बाहर ठंडी रात का गहरा कीचड़ दर्द भरे आदर्श
चलो यहां से हमें पुकारे नंगी सोचों का रथवान

१- कंठ २- मूल्य

'मख़्मूर' सईदी

ग़ज़ल

रंग पेड़ों का क्या हुआ देखो
कोई पत्ता नहीं हरा देखो

ज़िंदगी को शिकस्त[१] दी गोया
मरने वालों का हौसला देखो

ढूंडना अक्से-गुमशुदा[२] मेरा
अब कभी तुम जो आईना देखो

क्या अजब बोल ही पड़े पत्थर
अपना क़िस्सा उसे सुना देखो

यूं भी मुमकिन है तलाफ़ी-ए-ग़म[३]
ग़म सिवा[४] हो तो मुस्करा देखो

दोस्ती उस की निभ नहीं सकती
दिल न माने तो आज़मा देखो

अब यहां कौन आएगा 'मख़्मूर'
अब किसी का न रास्ता देखो

१- पराजय २-खोया हुआ प्रतिबिंब ३- ग़म की क्षति पूर्ति ४- अधिक

सैयद मोहम्मद जाफ़री

एब्स्ट्रेक्ट आर्ट

एब्स्ट्रेक्ट आर्ट की देखी थी नुमाइश मैं ने
की थी अज़-राहे-मुरव्वत[1] भी सताइश[2] मैं ने
आज तक दोनों गुनाहों की सज़ा पाता हूं
लोग कहते हैं कि क्या देखा तो शर्माता हूं
सिर्फ़ कह सकता हूं इतना ही वो तस्वीरें थीं
यार की ज़ुल्फ़ को सुलझाने की तद्बीरें थीं

एक तस्वीर को देखा जो कमाले-फ़न[3] थी
भैंस के जिस्म पे इक ऊंट की सी गरदन थी
नाक वो नाक ख़तरनाक जिसे कहते हैं
टांग खैंची थी कि मिसवाक[4] जिसे कहते हैं
नक़्शे-महबूब[5] मुसव्विर ने सजा रखा था
मुझ से पूछो तो तिपाई पे घड़ा रखा था

य़े समझने को कि ये आर्ट की क्या मंज़िल है
एक नक़्क़ाद[6] से पूछा, जो बड़ा क़ाबिल है
सब्ज़ए-ख़त[7] में वो कहने लगा रानाई[8] है
मैं यही समझा कि नाक़िस मिरी बीनाई[9] है
बोली तस्वीर जो मैं ने उसे उलटा पलटा
मैं वो जामा[10] हूं कि जिस का नहीं सीधा उलटा

उस को नक्काद तो इक चश्मए-हैवा[११] समझा
मैं उसे हज़रते-मजनूबू का गरेबां समझा

देर तक बहस रही मुझ में और उस में जारी
तब ये साबित हुआ होती है ये इक बीमारी
एक तस्वीर को देखा कि ये क्या रखा है
वरक़े-साफ़[१२] पे रंगों को गिरा रखा है
टेढ़ी तिरछी सी लकीरें थीं वहां जल्वा-फ़िगन[१३]
जैसे टूटे हुए आईने पे सूरज की किरन
बोला नक़्क़ाद, जो ये आर्ट है तजरीदी[१४] है
आर्ट का आर्ट है, तनक़ीदी[१५] की तनक़ीदी है
था क्यूबिज़्म में काग़ज़ पे जो आता था नज़र
मुझ को ईंटें नज़र आती थीं उसे हुस्ने-बशर[१६]
बोला नक़्क़ाद नज़र आते यही कुछ हम तुम
ख़ुल्द[१७] में हज़रते-आदम जो न खाते गंदुम
एब्स्ट्रेक्ट आर्ट बहर तौर नुमायां[१८] निकला
क़ैस[१९] तस्वीर के पर्दे में भी उरियां[२०] निकला
वो ख़दो-ख़ाल[२१] किसानी नहीं जिन का कोई आज
बात ये भी है कि मिलता नहीं रंगों का मिज़ाज
इस को क्यूबिज़्म का आज़ार[२२] कहा करते हैं
इस के ख़ालिक़[२३] जो हैं, बीमार रहा करते हैं

एक तस्वीर जो देखी तो ये सूरत निकली
जिस को समझा था अनन्नास वो औरत निकली

एब्स्ट्रेक्ट आर्ट की उस चीज़ पे देखी है असास[२४]
'तन की उरियानी से बेहतर नहीं दुनिया में लिबास'
इस नुमाइश में जो अतफ़ाल[२५] चले आते थे
डर के माओं के कलेजों से लिपट जाते थे

एब्स्ट्रेक्ट आर्ट का इक ये भी नमूना देखा
फ़्रेम काग़ज़ पे था, काग़ज़ जो था सूना देखा
वो हमें कैसे नज़र आए जो मक़सूम[२६] नहीं
'लोग कहते हैं कि है पर हमें मालूम नहीं'
डर से नक़्क़ादों के, इस आर्ट को यूं कहते हैं हम
शाहिदे-हस्तिए-मुत्लक़[२७] की कमर है आलम[२८]

अलगरज़[२९] जाइज़ा[३०] ले कर ये किया है इन्साफ़
आज तक कर न सका अपनी ख़ता ख़ुद मैं मुआफ़
मैं ने ये काम किया सख़्त सज़ा पाने का
ये नुमाइश न थी इक ख़्वाब था दीवाने का
कैसी तस्वीर बनाई मिरे बहकाने को
अब तो दीवाने भी आने लगे समझाने को

१- लिहाज़ से २- प्रशंसा ३- कला का कमाल ४- दातुन ५- प्रिया का चित्र ६- समालोचक ७- चेहरे के लोम ८- आकर्षण ९- नेत्र ज्योति १०- लिबास ११- अमृत कुंड १२- कोरे काग़ज़ १३- दर्शन दे रही १४- अमूर्त १५- आलोचना १६- मानव सौंदर्य १७- जन्नत १८- प्रकट १९- मजनूं २०- नग्न २१- नख शिख २२- रोग २३- रचनाकार २४- नींव २५ - बच्चे २६- भाग्य में २७- विधाता २८- संसार २९- गर्ज़ें कि ३०- विश्लेषण

मोहम्मद अलवी

आख़िरी दिन की तलाश

ख़ुदा ने क़ुरआन में कहा है
कि लोगो मैं ने
तुम्हारी ख़ातिर फ़लक[1] बनाया
फ़लक को तारों से
चांद सूरज से जगमगाया
कि लोगो मैं ने
तुम्हारी ख़ातिर ज़मीं बनाई
ज़मीं के सीने पे
नद्दियों की लकीरें खैंची
समुंदरों को
ज़मीं की आग़ोश[2] में बिठाया
पहाड़ रखे
दरख़्त पे फूल, फल लगाए
कि लोगो मैं ने
तुम्हारी ख़ातिर ये दिन बनाया
कि दिन में सब काम कर सको तुम
कि लोगो मैं ने
तुम्हारी ख़ातिर ये शब[3] बनाई
कि शब में आराम कर सको तुम

कि लोगों मैं ने
तुम्हारी ख़ातिर ये सब बनाया
मगर न भूलो
कि एक दिन मैं
ये सारी चीज़ें समेट लूंगा !

ख़ुदा ने जो कुछ कहा है
सच है
मगर न जाने
वो दिन कहां हैं ?
वो आख़िरी दिन
कि जब ख़ुदा ये तमाम चीज़ें समेट लेगा
मुझे उसी दिन की जुस्तजू[४] है
कि अब ये चीज़ें
बहुत पुरानी
बहुत ही फ़ससूदा[५] हो चुकी हैं !!

१- आकाश २- गोद ३- रात ४- तलाश ५- घिसी पिटी

'मख़्दूम' मुहैयुद्दीन

आज की रात न जा

रात आई है, बहुत रातों के बाद आई है
देर से, दूर से, आई है, मगर आई है
मरमरीं[१] सुब्ह के हाथों में छलकता हुआ जाम आएगा
रात टूटेगी उजालों का पयाम आएगा
आज की रात न जा !

ज़िंदगी लुत्फ़[२] भी है, ज़िंदगी आज़ार[३] भी है
साज़ो-आहंग[४] भी, ज़ंजीर की झंकार भी है
ज़िंदगी दीद[५] भी है, हसरते-दीदार[६] भी है
ज़हर भी, आबे-हयाते-लबो-रुख्सार[७] भी है
ज़िंदगी दार[८] भी है, ज़िंदगी दिलदार भी है
आज की रात न जा !

आज की रात बहुत रातों के बाद आई है
कितनी फ़र्खुंदा[९] है शब,[१०] कितनी मुबारक है सहर[११]
वक़्फ़[१२] है मेरे लिए तेरी मोहब्बत की नज़र
आज की रात न जा !

१- मरमर पत्थर ऐसी २- आनंद ३- दुःख ४- संगीत ५- दर्शन (प्रिया के) ६- दर्शनाभिलाषा
७- होंठों और कपोलों के लिए अमृत ८- सूली ९- मांगलिक १०- रात ११- सुबह
१२- समर्पण

मुर्तज़ा बरलास

ग़ज़ल

दिल सोज़े-दरूं[1] से पिघल जाए तो अच्छा
जलना है तो ख़ामोश ही जल जाए तो अच्छा

डाले गए इस वास्ते पत्थर मिरे आगे
ठोकर से अगर होश संभल जाए तो अच्छा

ये सांस की डोरी भी जो कट जाए तो बेहतर
इक फांस है सीने से निकल जाए तो अच्छा

फ़र्दा[2] के हसीं ख़्वाब दिखाए कि मिरा दिल
मट्टी के खिलौने से बहल जाए तो अच्छा

अर्मान लहू हो के जो बह जाएं तो क्या ग़म
हसरत जो तिरे दिल की निकल जाए तो अच्छा

ठोकर कहीं लग जाए न इस तेज़ रवी[3] में
अब वक़्त की रफ़्तार बदल जाए तो अच्छा

१- भीतरी तपन २- आने वाले कल ३- गति

मुसहिफ़ इक़बाल तौसीफ़ी

ग़ज़ल

चांद ने अपना दीप जलाया, शाम बुझी वीराने में
उस की बस्ती दूर है शायद, देर है उस के आने में

क्या पत्थर की भारी सिल है, एक इक लम्हा[1] माज़ी[2] का
देखो दब कर रह जाओगे इतना बोझ उठाने में

उस को नहीं देखा है जिस ने, मुझ को भला क्या समझेगा
उन आंखों से गुज़रना होगा मेरे दिल तक आने में

मेरी रातों में महके हैं, जो सपनों की डाली से
रंग है उन फूलों का शामिल, आज तिरे शर्माने में

अपनी ज़ात से कुछ निस्बत[3] थी, वो भी उस की ख़ातिर से
मेरा ज़िक्र नहीं मिलता है, अब मेरे अफ़साने में

एक ही दुख था मेरा अपना वो भी उस को सौंप दिया
आख़िर दिल की बात ज़बां तक आ ही गई अनजाने में

१- क्षण २- अतीत ३- संबंध

मुज़फ़्फ़र हन्फ़ी

वक़्त के हमाम में दो नंगे

ठीक पंद्रह साल बाद
वो मुझे कल शाम इक भटियारख़ाने में मिला था
देर तक इक दूसरे से हम गले मिलते रहे
और लंगड़ी याद को सिगरेट से सुलगाते रहे

उस ने कहा :
याद है वो ऊंट जो इंगलिश पढ़ाता था हमें ?
वो चने के खेत वाला वाक़िया ?
रात में गन्ने की चोरी ?
दोपहर में आम के बाग़ों पे डाके
और लोगों का हमें हमज़ाद[१] कहना,
याद है ?

मुस्करा कर मैं ने अपना सर हिलाया
और पूछा :
क्या तुम्हें भी याद है...
गांव का गंदा सा वो तालाब
हम नहाते थे जहां ?
वो हंस पड़ा

देर तक इक दूसरे को ताकते ख़ामोश हम बैठे रहे
अन कही बातों को भी सुनते रहे

आख़िरश मैं ने कहा :
आओ...
तुम को शहर के कुछ ख़ास लोगों से मिलाऊं
उस की बोसीदा क़मीज़ और चीथड़ा पतलून हकलाने लगे
यार ! मेरे पांव में तकलीफ़ है !

१- जुड़वां

मुनीर नियाज़ी

मैं और मेरा ख़ुदा !

लाखों शक्लों के मेले में तन्हा रहना मेरा काम
भेस बदल कर देखते रहना तेज़ हवाओं का कुहराम[1]
एक तरफ़ आवाज़ का सूरज एक तरफ़ इक गूंगी शाम
एक तरफ़ जिस्मों की ख़ुशबू एक तरफ़ उस का अंजाम[2]
बन गया क़ातिल मेरे लिए तो अपनी ही नज़रों का दाम[3]

सब से बड़ा है नाम ख़ुदा का, उस के बाद है मेरा नाम !

१- शोर २- परिणाम ३- जाल

नासिर काज़मी

ग़ज़ल

होती है तेरे नाम से वहशत[१] कभी कभी
बरहम[२] हुई है यूं भी तबीयत कभी कभी

ऐ दिल किसे नसीब से तौफ़ीक़े-इज़्तिराब[३]
मिलती है ज़िंदगी में ये राहत[४] कभी कभी

जोशे-जुनूं[५] में दर्द की तुग़यानियों[६] के साथ
अश्कों[७] में ढल गई तिरी सूरत कभी कभी

तेरे क़रीब रह के भी दिल मुत्मइन[८] न था
गुज़री है मुझ पे ये भी क़ियामत कभी कभी

कुछ अपना होश था न तुम्हारा ख़याल था
यूं भी गुज़र गई शबे-फ़ुर्क़त[९] कभी कभी

ऐ दोस्त हम ने तर्के-मोहब्बत[१०] के बावुजूद
महसूस की है तेरी ज़रूरत कभी कभी

१- घबराहट २- क्रुद्ध ३- व्याकुलता की सामर्थ्य ४- आनंद ५- उन्माद के जोश ६- तूफ़ानों
७- आंसुओं ८- संतुष्ट ९- विरह की रात १०- प्रणय त्याग

निदा फ़ाज़ली

तुम्हारे ख़त

वो जो तुम ने लिखे थे कभी कभी मुझ को
मैं आज सोच रहा हूं, उन्हें जला डालूं !

बुझा बुझा सा चला आ रहा हूं आफ़िस से
दिमाग़ गर्म है जलते हुए तवे की तरह
नहीफ़[१] हाथों से फिर फ़ाइलों के ग़ारों में
उदास दिन का हिमालय गिरा के आया हूं !

बदन निढाल है उस नौजवां सिपाही सा
कई महीनों से औरत मिली न हो जिस को
गुदाज़[२] जिस्म की जन्नत मिली न हो जिस को

वो गीतकार 'निदा फ़ाज़ली' जिसे तुम ने
कभी नशिस्तों[३] में देखा था गुनगुनाते हुए
ख़यालो-फ़िक्र[४] की क़ौसे-कुज़ह[५] खिलाते हुए
हवाए-वक़्त[६] से इक बुलबुला सा फूट गया
ग़मे-हयात[७] के पत्थर से कांच टूट गया

थके बदन को फ़क़त[८] चारपाई भाती है
बजाय याद के अब मुझ को नींद आती है !

१- निर्बल २- मांसल ३- महफ़िलों ४- चिंतन और विचारों ५- इंद्रधनुष ६- समय की
७- सांसारिक दुःख ८- केवल

अहमद नदीम क़ासिमी

फ़न[१]

एक रक़्क़ासा[२] थी–किस किस से इशारे करती
आंखें पथराईं, अदाओं में तवाज़ुन[३] न रहा
डगमाई तो सब अतराफ़[४] से आवाज़ आई–
'फ़न की इस ओज[५] पे इक तेरे सिवा कौन गया'

फ़र्शे-मरमर पे गिरी, गिर के उठी, उठ के झुकी
ख़ुश्क होंटों पे ज़बां फेर के पानी मांगा
ओक उठाई तो तमाशाई संभल कर बोले
रक़्स[६] का ये भी इक अंदाज़ है अल्लाह अल्लाह !

हाथ फैले रहे सिल सी गई होंटों से ज़बां
एक रक़्क़ास[७] किसी सम्त[८] से नागाह[९] बढ़ा
पर्दा सरका तो मअ़न[१०] फ़न के पुजारी गरजे
'रक़्स क्यों ख़त्म हुआ वक़्त अभी बाक़ी है'

१- कला २- नर्तकी ३- संतुलन ४- ओर ५- शिखर ६- नृत्य ७- नर्तक ८- ओर ९- सहसा १०- एकाएक

नूर बिजनौरी

ग़ज़ल

आस के रंगीं पत्थर कब तक ग़ारों में लुढ़काओगे
शाम ढले इन कुहसारों[1] में, अपनी खोज न पाओगे

जाने पहचाने से चेहरे अपनी सम्त[2] बुलाएंगे
क़दम क़दम पर लेकिन अपने साए से टकराओगे

हर टीले की ओट से लाखों वहशी आंखें चमकेंगी
माज़ी[3] की हर पगडंडी पे नेज़ों में घिर जाओगे

फुंकारों का ज़हर तुम्हारे गीतों पर जम जाएगा
कब तक अपने होंट मिरी जां ! सांपों से डसवाओगे

चीख़ेंगी बदमस्त हवाएं, ऊंचे ऊंचे पेड़ों पर
रूठ के जाने वाले पत्तो ! कब तक वापिस आओगे

जादू नगरी है ये प्यारे आवाज़ों पर ध्यान न दो
पीछे मुड़ कर देख लिया तो पत्थर के हो जाओगे

१- पर्वतीय क्षेत्रों २- और ३- अतीत

नैयर जहां नैयर

जेल से फ़रार

दोस्तो, साथियो—तुम रुको तो सही
दौड़ते हो किधर
कुछ सुनो तो सही

जेल से भाग कर तुम कहां जाओगे
इन सलाख़ों को तुम तोड़ भी दो अगर
जेलख़ाना यहां ख़त्म होता नहीं

इन हदों से परे
वो तो बाहर भी है
जिन सलाख़ों से ता'मीर इस की हुई
उन सलाख़ों को तुम देख सकते नहीं

ये सलाख़ें जो मज़हब की, मिल्लत की हैं
ये जो रंगत की, रस्मो रिवायत की हैं
जो हवाओं, फ़जाओं में ता'मीर[१] हैं
इन सलाख़ों को तुम तोड़ सकते नहीं
रस्म के, रीत के जेलख़ाने जिन्हें
हम अज़ल[२] से बनाने में मसरूफ़ हैं
इन से बच कर बताओ कहां जाओगे !

ये तो छोटा सा इक जेलख़ाना है यां
हम सब मुजरिमों की क़तारों में हैं

कुछ तो इन्साफ़ है
इस से बाहर मगर
मुंसफ़ी के लिए, जाओगे तुम कहां
कौन ज़ालिम है और कौन मज़लूम है
कौन क़ातिल है और कौन मक़्तूल है
दोस्त दुश्मन सभी एक जैसे हैं वां
दोस्तो, साथियो–रुक सको तो रुको
यां से जाने से पहले ज़रा सोच लो
जेलख़ाना कहीं ख़त्म होता नहीं !

१- निर्मित २- आदि

वज़ीर आग़ा

ग़ज़ल

लाज़िम कहां कि सारा जहां ख़ुश लिबास[१] हो
मैला बदन पहन के न इतना उदास हो

इतना न पास आ कि तुझे ढूंडते फिरें
इतना न दूर जा कि हमःवक़्त[२] पास हो

इक जूए-बेक़रार[३] हो क्यों दिलकशी तिरी
क्यों इतनी तश्नालब[४] मिरी आंखों की प्यास हो

पहना दे चांदनी को क़बा[५] अपने जिस्म की
उस का बदन भी तेरी तरह बे लिबास हो

रंगों की क़त्लगह[६] में कभी तू भी आ के देख
शायद कि रंगे-ज़ख़्म कोई तुझ को रास हो

मैं भी हवाए-सुब्ह[७] की सूरत फिरूं सदा
शामिल गुलों[८] की वास में गर तेरी बास हो

आए वो दिन किश्ते-फ़लक[९] हो हरी भरी
बंजर ज़मीं पे मीलों तलक सब्ज़ घास हो

१- अच्छे वस्त्रों वाला २- हर समय ३- व्याकुल ४- प्यासी ५- चोग़ा ६- वधस्थल
७- प्रभात समीर ८- फूलों ९- आकाश की खेती